ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 14 अंक 4 दिसंबर 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
धर्म हेत साका जिनि किआ 6
-भाई निशान सिंघ 'गंडीविंड
बड़े साहिबजादों की शहादत 12
-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर
साका चमकौर एवं साका सरहिंद 18
-डॉ. गुरविंदर कौर
साधो कउन जुगति अब कीजै 26
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि . . . 29
-डॉ. परमजीत कौर
बिहार के जद्दी सिक्ख : एक अध्ययन 33
-स. जगमोहन सिंघ
रंघरेटे, गुरु के बेटे— भाई जीवन सिंघ (कविता) 42
-रमेश बग्गा चोहला
सिध गोसटि : विचार व्याख्या 43
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११ ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग में 'बारह माहा' बाणी की इस पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभूमि में दांपत्य जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव-स्त्री को परमात्मा-पति की खुशियां प्राप्त करने वाला गुरमत मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी का कथन है कि पौष माह के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में उस जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है जिसको उसका प्रभु-पति गले लगा हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशल संभाल रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा होता है और उसका एक-एक श्वास प्रभु-पति के दीदार की तीव्र इच्छा में ही व्यतीत होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते, क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से सच्चा प्यार कर एकमन-एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु ने ऐसी नेक जीव-स्त्री का हाथ इस प्रकार पकड़ा होता है कि वह उससे पुनः बिछड़े ही न। ऐसे परमात्मा से तो मैं लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि जीव-स्त्री अपने मालिक के द्वार पर आ जाती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि उसको उसकी इज्जत रखनी ही होती है। परमात्मा बेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

संपादकीय

साहिबजादों की लासानी शहादत

संसार में से जुल्म-अत्याचार को खत्म कर सत्य, संतोष, दया, धर्म, धैर्य वाले सर्वकल्याणकारी राज्य तथा समाज की स्थापना हेतु दी गई अनगिनत कुर्बानियों से भरा पड़ा है सिक्ख इतिहास।

आज तक दुनिया भर में सबसे ज्यादा शहीद इसी कौम के हैं। सिक्खों ने हर प्रकार के जुल्म एवं अत्याचार का विरोध कर बदले में शहीदी प्राप्त की। शहीदों में दूध पीते बच्चों से लेकर ९० वर्षीय बुजुर्ग तक शामिल हैं। सिक्ख कौम को यह शिक्षा गुरु साहिबान से प्राप्त हुई, जिससे इनके मन से मृत्यु का भय जड़ से निकल गया।

पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठकर शहीदी प्राप्त करनी पड़ी। नवम् पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में शहादत देनी पड़ी। सिक्ख गुरु साहिबान जहां जब्र-जुल्म की जड़ें उखाड़ने के लिए शहीदी प्राप्त कर रहे थे वहीं हाकिम लोग जनता को धमकाने के लिए एक-दूसरे से बढ़कर जुल्म कर रहे थे। इसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना सारा परिवार कुर्बान कर दिया।

चमकौर साहिब की जंग में बहुत बड़ी ज़ालिम फौज से जूझते हुए साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी हक-सच के लिए शहीदी प्राप्त कर गये। वृद्ध अवस्था में माता गुजरी जी तथा बाल्य अवस्था में छोटे साहिबजादे— बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी को घोर यातनायें देकर सरहिंद में शहीद कर दिया। वजीर खान का यह अति घिनौना कार्य मुगल राज्य की गुलामी से आज़ादी के संघर्ष की सफलता के लिए रास्ता सपाट कर गया।

दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने आज़ाद सुपुत्रों (खालसा) के लिए अपने चारों साहिबजादों, माता गुजरी जी को कुर्बान कर दिया; हमारे लिए आज़ादी के चिन्ह 'संत-सिपाही' की वेश-भूषा बख्शिश की; हमें सदा के लिए सच्ची-सुच्ची गुरबाणी की शिक्षा के साथ जोड़ दिया; हर तरह की गुलामी से युगों-युगांतरों तक छुटकारा दिला दिया।

साहिबजादों की शहादत की स्मृति सिक्खों के मन-मस्तिष्क में सदा के लिए बसी हुई है। इस स्मृति को हिंदोस्तान का जनमानस अत्यंत श्रद्धा-भावना से महसूस करता है। फतहिगढ़ साहिब तथा चमकौर साहिब के क्षेत्र के लोग आज भी संताप झेलते देखे जा सकते है। इस क्षेत्र के सभ्याचारक जीवन में शहीदी साकों के करुणामयी के एहसास ने अपना संजीदा प्रभाव डाला है। शहीदी सप्ताह वाले दिनों में यहां के लोग अपने घर-परिवार में जहां दूर-दूरस्थ से आई संगत का अभिनंदन करते हैं, वहीं वैराग्य-में मायूस-से और गुम-सुम-से भी दिखाई देते हैं। कई गांवों की स्त्रियां आज भी इन दिनों में सफेद कपड़े पहनकर वैराग्यमयी अवस्था में नत्मस्तक होने के लिए शहीदी स्थान पर पहुंचती हैं। कई परिवार तो चारपाई-बिस्तर छोड़कर ज़मीन पर सोते हैं और चूल्हे तक नहीं जलाते। इस क्षेत्र के लोग इन दिनों विवाह-शादी का समारोह करने से भी संकोच करते हैं। इन सभी उपरोक्त कारणों से लोगों ने अपने महान शहीदों को सदा-सर्वदा के लिए अपने ख्यालों में बसाए रखा है।

हमें अपने-अपने बच्चों को साहिबजादों की शहादत की साखियां खुद सुनानी होंगी। बच्चों को नित्तनेमी बनाकर उनको गुरबाणी के अर्थों को समझाना पड़ेगा एवं तथा अपने पूर्वजों की उदाहरणें उनके समक्ष पेश करनी होंगी। बेगानी भाषाओं का मोह त्यागकर सबसे पहले अपनी भाषा का ज्ञान, अपनी विरासत का ज्ञान देना अति आवश्यक बनाना पड़ेगा।

धरम हेत साका जिनि कीआ

*-भाई निशान सिंघ 'गंडीविंड'**

कश्मीर के सूबेदार (गवर्नर) इफ्तिखार खान द्वारा औरंगजेब के हुक्म की पालना करते हुए कश्मीर के ब्राह्मणों को कई प्रकार के लालच और डर देकर, भारी अत्याचार कर मुसलमान बनाया जा रहा था। यदि कोई ब्राह्मण इसलाम धर्म अपनाने से मना करता था तो उसे भयानक कष्ट देकर कत्ल करवा देता था। इस दरिंदगी का उद्देश्य यह था कि सारे भारत में एक ही धर्म होगा— केवल और केवल इसलाम।

कुछ ब्राह्मण लोग पारिवारिक तथा शारीरिक कष्ट भोगते हुए और डरे-डराए अमरनाथ के मंदिर में चले गए। वहां औरंगजेब के जुल्मों से छुटकारा पाने के लिए पंडित कृपा राम की योजना सबके मन को भा गई और पंडित कृपा राम के नेतृत्व में दुखी ब्राह्मणों का १६ सदस्यीय शिष्टमंडल श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शरण में आ फ़रियादी हुआ :

कुसल बुझी जब स्री गुरू जी,
तब रोवत नैन कही कथ सारी।
हे प्रभ बूटत बयूह जनेवन,
गऊअन घात घनो दुख भारी ॥३ ॥९ ॥
सवा मन तूटत जनेऊ इक दिनस मंझार।
गलती भई महाराज जू सभ दुखत जरै अपार।
(कवि कुइर सिंघ, गुर बिलास पातशाही १०)
हाथ जोर कहियो किरपा राम।
दत्त बराहमण मटन ग्राम।
हमरो बल अब रहयो नहि काई।
है गुर तेग बहादर राई।
सेवा हरी इम अरज़ गुज़ारी।
तुम कलयुग के क्रिशन मुरारी।
(कवि सेवा सिंघ भट्ट, शहीद बिलास, भाई मनी सिंघ)

सरबत्त का भला चाहने वाले श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने कश्मीरी ब्राह्मणों की दुख भरी बातें सुनी। उन ब्राह्मणों को दीन से भ्रष्ट करने के बारे में सुनकर बहुत विह्वल होकर गंभीर अवस्था में ध्यान टिकाए बैठे सतिगुरु के पास उनके लाडले साहिबज़ादे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हाथ जोड़ कर खड़े ब्राह्मणों की मायूसी के बारे में पूछा तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बताया कि बादशाह औरंगजेब ज़बरदस्ती ब्राह्मणों को मुसलमान बना रहा है। धर्म की रक्षा के लिए किसी महान आत्मा के बलिदान की ज़रूरत है। भाई सुक्खा सिंघ बताते हैं :

ये सुन कर पित की सुत बानी,
बीच सभा कहि प्रगट बखानी।
तुम ते और अधक को आही,
देग तेग जा के ग्रहि माही।
(गुर बिलास पातशाही १०)

**मुख्य ग्रंथी, गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा जी, गांव ठट्ठा, जिला तरनतारन, फोन : ९७८१९-८४१८४*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचन थे— ''पिता जी! आप जी से बड़ी, महान, पवित्र आत्मा और कौन हो सकती है?''

यह सुनकर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने अपने लाडले साहिबज़ादे को अपनी बांहों में लेकर प्यार करते हुए शरण में आए कश्मीरी ब्राह्मणों को ढाढ़स बंधाते हुए समझा दिया कि औरंगजेब ख़ून का प्यासा ख़ून ही पीएगा और हम उसकी ख़ूनी प्यास को मिटाएंगे। कवि कंकण 'संक्षेप दस गुर कथा' में लिखते हैं :

तिनहि गुरू पुन धीरज दीना।
स्त्रोत पीएगो इह कमीना।
अब इस की हम पिआस मिटावै।
सुरि पुर जावहि धरम बचावै॥

सतिगुरु जी ने ब्राह्मणों को वापिस जाने के लिए कहते हुए हिदायत दी कि ज़ालिम सूबेदार से जाकर कह दो :

प्रिथम करो गुरू मुसलमान।
मगर होवेगा सगल जहान।

(प्राचीन पंथ प्रकाश)

अर्थात् वे अपने धर्म को छोड़ कर इसलाम मत अपनाने में जरा भी देर नहीं करेंगे, यदि हुकूमत श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को इसलाम कबूल करने के लिए राज़ी कर ले।

ब्राह्मणों ने श्री अनंदपुर साहिब से सीधे लाहौर जाकर वहां के सूबेदार को गुरु साहिब के साथ हुई सारी व्यथा और उनके अटल फ़ैसले के बारे में बड़े विस्तारपूर्वक बताया। लाहौर के सूबेदार ने कश्मीर के सूबेदार को रिपोर्ट पहुंचायी। इसी तरह कश्मीर के सूबेदार इफ्तिखार खान ने सारी सूचना औरंगजेब के पास पहुंचायी, जिसको सुनकर औरंगजेब बहुत खुश हुआ। वह समझता था कि ब्राह्मणों को इसलाम में लाने का आसान रास्ता मिल गया है। उसने तुरंत कश्मीर के सूबेदार को अत्याचार बंद करने के लिए कहा और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को कैद कर लेने का हुक्म भेज दिया।

सच-धर्म की मूर्ति श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने ज़बरदस्ती हो रहे इसलामीकरण को रोकने के लिए विरोध स्वरूप शहादत देने हेतु निश्चय कर लिया।

काबुल की मुहिम से मुक्त होकर महयुद्दीन मुहम्मद (औरंगजेब) हसन अब्दाल से वापिस आने की तैयारियां कर रहा था। इस दरमियान अपने श्रेष्ठ वचन ''*भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥*''को पूर्ण रूप से निभाने के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म प्रचार पर निकल पड़े। संगत के हृदय में सच-धर्म का बीज बोते हुए, गुरमति की खुशबू बांटते हुए सतिगुरु श्री अनंदपुर साहिब से चल कर रोपड़ के समीप मलकपुर रंघड़ां में एक रात ठहरे। कीरतपुर साहिब और रोपड़ होते हुए गुरु जी मालवा क्षेत्र की तरफ गए। फिर पटियाला से चार कोस उत्तर-पूरब की तरफ अपने परम मित्र सैयद सैफ़ ख़ान (सैफुद्दीन) के घर 'सैफाबाद' (बहादुरगढ़) में एक महीना ठहरे। सैफुद्दीन सतिगुरु को कश्मीरी ब्राह्मणों की सहायता न करने के लिए रोकते हुए मिन्नतें करने लगा कि आप आगे मत जाओ, क्योंकि औरंगजेब बहुत ज़ालिम है। सतिगुरु अपने वचन पर अटल थे। कवि चांद ने गुरु साहिब के संकल्प और दृढ़

वचनों को बड़े सुंदर शब्दों में इस प्रकार लिखा है:

चित चरन कमल का आसरा,
चित चरन कमल संग जोड़ीऐ।
मन लोचे बुरिआईआं,
गुर शबदी इह मन होड़ीऐ।
बांह जिंन्हां दी पकड़ीऐ,
सिर दीजै बाँहि न छोड़ीऐ।
तेग बहादर बोलिआ,
धर पईऐ धरम न छोड़ीऐ।

पटियाला और फिर कायमपुर-बिलासपुर के मध्य रात बिता कर गुरु जी उमरा मुहम्मद की गढ़ी (समाणा) में पहुंच गए। अकाल पुरख और उसके हुक्म (भाणे) को सत्य कर मानने का उपदेश देकर अपने साथ भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दिआला जी, भाई ऊदै जी, भाई जैता जी और भाई गुरदित्ता जी को साथ लेकर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब संगत को दर्शन-उपदेश देते हुए अलग-अलग गांवों-स्थानों से होते हुए समाणा से आगरा पहुंचे। प्रचलित है कि सतिगुरु जी ने एक उद्यान में बकरियां चरा रहे सैयद हसन अली के पोते को अंगूठी और दुशाला देते हुए कहा, ''अपने दादा को साथ ले जा और यह अंगूठी बेच कर, कुछ मिठाई खरीद कर इस दुशाले में डाल कर ले आना।''

पोता हलवाई से मिठाई खरीदने चल पड़ा। दूसरी तरफ बूढ़े सैयद हसन अली ने कोतवाल के पास जाकर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को गिरफ़्तार करने की मुखबरी कर दी। कोतवाल ने जब किलेदार को बताया तो उसने तुरंत एक सौ सवार सिपाही भेजकर सतिगुरु को प्रमुख सिक्खों सहित गिरफ़्तार कर लिया। जब यह रिपोर्ट दिल्ली हुकूमत के पास पहुंची तो वहां से आए बारह सौ सवार सिपाही सतिगुरु और उनके प्यारे सिक्खों को हिरासत में लेकर दिल्ली पहुंचे।

औरंगजेब नहीं चाहता था कि श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब लोगों के मसीहा के रूप में उभर कर सामने आएं। बेशक औरंगजेब सतिगुरु की गिरफ़्तारी के समय हसन अब्दाल में था, परंतु दिल्ली में हुकूमत सब कुछ उसके इशारे पर ही कर रही थी। हाकिम जमात समझती थी कि यदि श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब इसलाम धर्म कबूल कर लें तो सभी भारतीय मुसलमान बन जाएंगे, क्योंकि उस समय हक-सच के लिए लड़ने वाला केवल श्री गुरु नानक पातशाह का ही घर था।

शाही हुकूमत ने पहले सतिगुरु का सम्मान किया और यह मनवाने के लिए ज़ोर लगाया कि दुनिया में केवल और केवल इसलाम धर्म ही संपूर्ण है, बाकी सब धर्म अधूरे हैं। गुरु जी ने समझाया कि धर्म तो जीवन-उद्धार का एक मार्ग है। जो जिस धर्म में है उसे वही धर्म मुबारक है। अच्छे-बुरे तो इंसान के कर्म होते हैं। हिसाब धर्म का नहीं कर्म का होना है।

सतिगुरु के श्रेष्ठ शब्दों का कई शाही-दरबारियों के मन पर प्रभाव पड़ा और वे गुरु साहिब के श्रद्धालु बनने के लिए मजबूर हो गए। जब शाही हुकूमत को सतिगुरु को अधीनता स्वीकार कराने में असफलता दिखाई दी तो उसने गुरु जी को धन-दौलत, सुख-आराम और मान-सम्मान के कई लालच दिए। गुरु पातशाह ने हुकूमत को समझाया कि ईश्वर की राह पर चलने

वाले धर्मी पुरुष सांसारिक धन-पदार्थों, सांसारिक सुख-आराम और सांसारिक मान-प्रतिष्ठा की ख़ातिर अपना दीन-ए-ईमान नहीं गंवाते।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के पवित्र मुख से सच्चे वचन सुनकर हुकूमत क्रोधित हो गई और सतिगुरु के साथ अति कठोरता से पेश आने लगी। कवि कुइर सिंघ लिखते हैं :

रैन भहे दुरजन तहि आए।
त्रास दिखावै दुखहि तपाए ॥७८ ॥
वण की छटी ब्रसावै कैसे।
लासा परी गुरू तन कैसे।
कंचन मै जन चूनी पाता।
गिरी मनी लख कंपत गाता ॥ ७९ ॥

(गुर बिलास पातशाही १०)

बीबी जैबुनिशा को जब अपने ज़ालिम पिता औरंगजेब के हुक्म से श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब पर किए जा रहे जुल्म का पता चला तो उसने दिल्ली के चांदनी चौंक के कोतवाल ख्वाजा अब्दुल्ला को चिट्ठी लिखी :

जैबुनिशा दरोगे नूं खत लिखिआ,
नजर वैरी दे नाल तूं तक्कणा नईं।
नौवां गुरू है अल्हा दा नूर सच्चीं,
सेवा करदिआं अक्कणा-थक्कणा नईं।
जदों साडे गुनाहां दी पंड खुल्ही,
पड़दा गुरु दे बिनां किसे ढक्कणा नईं।
गुर-निशान जा असां दे कोल होइआ,
रब्बी दरगह जमां ने सानूं डक्कणा नईं।

कोतवाल तो पहले से ही गुरु जी के नूरी मुखड़े को देखकर और उनके मुख से श्रेष्ठ उपदेश सुनकर बहुत प्रभावित था, अब जैबुनिशा का खत मिलने पर वह गुरु जी का पक्का श्रद्धालु बन गया। बेशक उसकी हुकूमत-कानून के आगे कोई पेश नहीं जाती थी मगर फिर भी सिक्खों को चोरी-छिपे गुरु साहिब के दर्शन करवा देता था।

दिन-ब-दिन सतिगुरु पर कड़ी कठोरता दिखाई जा रही थी। एक दिन भाई ऊदै जी, भाई जैता जी और भाई गुरदित्ता जी ने विचार किया कि हमें गुरु जी से आज्ञा लेनी चाहिए और हम ज़ालिम-ज़ुल्म के विरुद्ध मैदान-ए-जंग में लड़कर शहादत प्राप्त करें। इस तरह सोच कर जब सिक्ख गुरु जी की शरण में गए तो गुरु जी ने उनके मन की जानकर उन्हें आज्ञा दी।

औरंगजेब ने दिल्ली की हुकूमत को गुरु साहिब पर और अधिक तशद्दद करने तथा गुरु जी को करामात दिखाने, कलमा पढ़ा कर मुसलमान बनाने का सख़्त हुक्म दिया। प्रचलित है कि गुरु जी के आगे तीन शर्तें रखी गईं, जिनमें से एक कबूल करनी ज़रूरी थी —

१. इसलाम कबूल करो
२. करामात दिखाओ
३. मौत कबूल करो।

श्री गुरु तेग बहादर जी अपने धर्म पर चट्टान की तरह दृढ़ थे। सतिगुरु जी ने हुकूमत और काज़ी-मौलानों को बताया कि शारीरिक या दुनियावी सुख-आराम एवं झूठे मान-सम्मान के लिए सत्यवादी पुरुष कभी अपना दीन-ईमान नहीं त्यागते। यदि ज़बरदस्ती किसी मनुष्य को धार्मिक संस्कार के कारण अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर कर भी लिया जाये तो याद रखो, उस मनुष्य के मन को, जो अपने धर्म के साथ जुड़ा

है, उससे अलग नहीं कर सकते। दूसरा, जो आप हमें करामात दिखाने की रट लगाए बैठे हो उसके बारे में हम पहले भी मना कर चुके हैं :

बाझो सचे नाम दे होरु करामाति असां ते नाही।

(वार १:४३)

रही बात, मौत कबूल करने की, यह शर्त हमें स्वीकार है :

जो सूरा तिस ही होइ मरणा॥
जो भागै तिसु जोनी फिरणा॥
जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ॥ *(पन्ना १०१९)*

धार्मिक स्वतंत्रता हेतु शहादत का जाम पीने के लिए तैयार श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के ऊंचे और दृढ़ इरादे को सुनते ही औरंगजेब का हुक्म था कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद कर दिया जाए तथा उनके शरीर के टुकड़े कर शहर के चारों तरफ टांग दिए जाएं।

गुरु साहिब की शहादत से पहले उनके सामने उनके प्यारे सिक्ख भाई मतीदास जी को आरे से चीर कर, भाई दिआला जी को देग में उबाल कर और भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर ज़िंदा जला कर शहीद कर दिया गया। हुकूमत के भयानक डर और कष्ट श्री गुरु तेग बहादर साहिब को अपने निश्चय से डिगा न सके।

काफी समय तक गुरु जी के साथ सख़्ती से पेश आया गया, लेकिन गुरु जी परमात्मा के साथ निरंतर जुड़े होने के कारण अचल थे। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को कैद से बाहर निकाल कर चांदनी चौक (दिल्ली) लाया गया। गुरु जी को शहीद करने का दिन और समय नियत था। ढिंढोरा पिटवाया गया। हिंदुओं-तुर्कों आदि का भारी इकट्ठ हुआ, जिसमें गुरु जी के सिक्ख (भाई जैता जी, भाई ऊदै जी, भाई गुरदित्ता जी आदि) भेस बदल कर अपनी ज़िम्मेदारी निभाने के लिए शामिल थे।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की इच्छानुसार पास के कुएं से जल लाकर स्नान करवाया गया। फिर गुरु जी ने बरगद के पेड़ के नीचे चौंकड़ा (पालती, आसन) लगाया। सामने बैठा गांव समाणा का जल्लाद (सैयद जलालुद्दीन) अपनी तलवार की धार को तेज करते हुए गुरु जी की तरफ गहरी नज़र से देख रहा था, जिसको देख कर गुरु जी ने कहा :

किउं तेग नूं तेग विखांवदा एं?
इह तेग नहीं तेग तों डरन वाला।
तेग, तेग दे धनी दा है पुत्तर,
मीरी-पीरी दी तेग जो फड़ण वाला।
पंजवें पातशाह खून दे सिंजिआ जो,
सिक्खी बूटा नहीं तेग नाल झड़न वाला।
घर तेग दे जो गोबिंद आइआ,
तेग उहदी ना अग्गे कोई अड़न वाला।
विच्चों तेग दे खालसा होऊ पैदा,
निशान जुल्म दा खत्म जो करन वाला।

जब श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी ने जपु जी साहिब का सम्पूर्ण पाठ कर वाहिगुरु जी का शुक्राना करने के लिए शीश झुकाया तो जल्लाद ने तलवार का वार किया, जिससे सतिगुरु जी का पवित्र शीश धड़ से अलग हो गया। मार्गशीर्ष सुदी ५ (११ मार्गशीर्ष), संवत् १७३२ मुताबिक ११ नवंबर, सन् १६७५ ई. को वृहस्पतिवार वाले दिन नौवें पातशाह ने शहादत दी :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का॥

कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी ॥१३ ॥
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥
नाटक चेटक कीए कुकाजा ॥
प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥१४ ॥
दोहरा ॥
ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि
प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५ ॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६ ॥

(बचित्र नाटक)

धर्म-रक्षक नौवें गुरु को शहीद कर उनकी पवित्र देह के पास हुकूमत ने पहरे लगा दिए कि कोई भी सिक्ख अपने धर्म-सिद्धांतों के अनुसार गुरु जी का अंतिम संस्कार न कर सके। भाई सेवादास लिखते हैं:

ते गुरु जी दी लोथ उपरि पातशाही चौकीआं बैठ गईआं। लोथ ना चावन मिले।

(परचीआं सेवादास, पृष्ठ ९४)

शाही फ़ौज तैनात किये गए सिपाही पत्ता तक नहीं हिलने दे रहे थे। भाई कलिआणा दी धर्मशाला, रायसीना (दिल्ली) में भाई सदानंद जी, भाई आगिआ राम जी, भाई ऊदै जी, भाई लक्खी शाह वणजारा, भाई जैता जी आदि गुरसिक्खों ने श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शहीद की गई पवित्र देह को चांदनी चौंक (दिल्ली) से उठाने की योजना बनाई थी। प्रचलित है कि बहुत तेज़ आंधी-तूफान आया, जिसकी ताब को शाही फ़ौज के सिपाही सहन न कर सके। बनाई गई योजना के अनुसार भाई जैता जी सतिगुरु का पवित्र शीश उठा कर श्री अनंदपुर साहिब के रास्ते चले गए। बाकी सिक्ख भाई लक्खीशाह वणजारे की बैलगाड़ी पर सतिगुरु के पावन धड़ को उठाकर ले गए और जाकर दाह संस्कार किया। वहां आजकल गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब (दिल्ली) सुशोभित है।

श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के पवित्र शीश को चादर में लपेट कर, अपनी छाती के साथ लगाकर भाई जैता जी शाही हुकूमत से आंख बचा कर टेढ़े-मेड़े रास्तों से होते हुए जब कीरतपुर साहिब पहुंचे तो भाई ऊदै जी भी साथ आ मिले। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आदेशानुसार श्री अनंदपुर साहिब में जुड़ी सारी संगत कीरतपुर साहिब पहुंच गई। फिर गुरु साहिब के पवित्र शीश को सुंदर पालकी, दुशालों में सजाकर सारी संगत कीरतपुर साहिब से श्री अनंदपुर साहिब तक हरि-यश करती हुई पहुंची। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, माता गुजरी जी, (मामा) भाई किरपाल चंद जी और अन्य गुरसिक्खों ने अभिवादन किया। श्री अनंदपुर साहिब में जहां श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी के पवित्र शीश का दाह संस्कार किया, वहां गुरुद्वारा शीशगंज साहिब सुशोभित है। याद रहे कि दिल्ली से नौवें गुरु जी के पवित्र शीश को उठाकर श्री अनंदपुर साहिब लाने वाले भाई जैता जी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा ''रंघरेटा, गुरु का बेटा'' कह कर निवाजा गया।

बड़े साहिबजादों की शहादत

*-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों की शहीदी दिल दहलाने वाली, विलक्षण, लामिसाल और ऐतिहासिक घटना है। इस घटना को पूरी तरह से समझने के लिए भारत के इतिहास तथा समय के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हालात के बारे में जानना ज़रूरी रहेगा।

संक्षेप में यह समझने की ज़रूरत है कि किसी समय यह देश सोने की चिड़िया था। भारतीय समाज में किये गये वर्ण-विभाजन के कारण यह देश तहस-नहस हो गया। इसके साथ ही यहां के देशी रियासती राजाओं की ऐशप्रस्ती, लूटमार, आपसी वैर-विरोध, असमान आर्थिक विभाजन आदि ने जलती आग में घी डालने का काम किया। परिणामस्वरूप यह हुआ कि देश में अनेक कमियां और कमजोरियां आ गईं। देशवासी अपने धर्म, स्वाभिमान और देश की सरहदों की रक्षा करने में असमर्थ हो गये। हालात ऐसे बन गए कि हज़रत मुहम्मद साहब के ६३२ ई. में वफ़ात (देहांत) के ८० वर्ष बाद ७१२ ई. में अफगानिस्तान का १८ वर्ष का युवक मुहम्मद-बिन-कासिम २०० घुड़सवार लेकर देश पर हमलावर बन कर आया और सारे देश की लूट-मार कर वापिस चला गया। इससे बड़ी त्रासदी किसी देश की और क्या हो सकती है? अफगानी हमलों का दौर जारी रहा और अंततः ११९२ ई. में देश इस नई उभरी 'मुगल शक्ति' का गुलाम हो गया। अपना धर्म, देश और सामाजिक ताना-बाना बचाने की जगह यहां के राजाओं व देश के लोगों ने गुलामी को ही स्वीकार कर लिया। धर्म-परिवर्तन आरंभ हो गया। *''अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई॥''* का बोलबाला हो गया। भारतीय रियासती राजाओं, धार्मिक कट्टरवादी शक्तियों और राजसी मुगल शक्तियों के जुल्म के कारण भारतीय श्रमिक श्रेणी त्राहि-त्राहि कर रही थी। उनके पास न ही कोई गुरु था, न ही धर्म था, न ही कोई शक्ति थी और न ही उनकी अगुआई करने वाला कोई समर्थ और योग्य राजनीतिक नेता था। हालात यहां तक बिगड़ गए थे कि जिन राजाओं ने देश की जान-माल और सरहदों व धर्म की रक्षा करनी थी, उन्होंने छोटे-छोटे लाभ हेतु गुलामी स्वीकार कर ली। राजपूत राजा मान सिंह ने अपनी बहन जोधा बाई की डोली बादशाह अकबर के हवाले कर दी और खुद उसके दरबार में अहलकारी प्राप्त कर ली। ऐसे समय में १२वीं, १३वीं, १४वीं सदी में पहले सूफी लहर और बाद में भक्ति लहर ने लोगों को जगाने का प्रयत्न किया। इस लहर को पूरा बल और सर्वपक्षीय नेतृत्व श्री गुरु नानक देव जी के रूप में ही मिला। गुरु जी का फलसफा बेसहारों को

*भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९९१५८-०५१००

सहारा और नेतृत्वहीन लोगों को सशक्त नेतृत्व प्रदान करने, धर्म विहीन लोगों को धर्म, स्वाभिमान, गैरत, मानव-समानता और जात-पांत तथा छुआ-छूत से रहित, विलक्षण और क्रांतिकारी था। श्री गुरु नानक देव जी ने खुद को देश की श्रमिक और तथाकथित नीच जाति के लोगों के साथ खड़ा किया। उनके उत्थान के लिए क्रांतिकारी आवाज़ बुलंद की। इस सर्वपक्षीय क्रांति का सारांश इस प्रकार कह सकते हैं :

—नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

—जिन की जात और कुल मांही
सरदारी नहि भई कदांही ।. . .
इन ही को सरदार बनावों
तबै गुबिंद सिंघ नाम सदावों ॥ *(पंथ प्रकाश)*

श्री गुरु नानक देव जी का तथाकथित नीच जाति के लोगों के हक में ज़ोरदार आवाज़ उठाने, भाई मरदाना जी को अपना साथी बनाने नियामानुसार कथा एवं कीर्तन में बिना किसी जात-पांत, भेदभाव के शामिल होने की छूट थी। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा संगत-पंगत में बिना किसी जात-पांत, भेदभाव के शामिल होने की छूट के बाद श्री गुरु अमरदास जी द्वारा 'पहले पंगत पाछे संगत' का सिद्धांत दृढ़ करवाया। श्री गुरु रामदास जी ने निर्मित किए श्री अमृतसर सरोवर में बिना किसी भेदभाव के जनमानस को स्नान करने की छूट प्रदान की। श्री गुरु अरजन देव जी ने संपादित श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बिना किसी भेदभाव के संतों-भक्तों की बाणी को शामिल किया। श्री हरिमंदर साहिब में हर किसी को कीर्तन श्रवण करने और संगत में जुड़ बैठने का हक प्रदान किया। इन सब महत् कार्यों के कारण देश के राजा व पुजारी वर्ग, तथाकथित उच्च जाति के लोग और मुगल शक्ति सब एकजुट होकर विरोध में डट गए। इस प्रकार यह क्रांतिकारी लोकपक्षीय लहर समय की राजसी शक्ति, कट्टरपंथी लोगों, दूसरों के हक हथियाने वाले, लूटमार करने वाले लोगों के लिए बर्दाश्त से बाहर थी। देश के रियासती राजाओं, धार्मिक कट्टरपंथियों और मुगल शक्ति द्वारा इस नई रौशनी, नई शक्ति और पूर्ण इन्कलाबी लहर को अपने रास्ते का पत्थर मान लिया गया। इन सभी शक्तियों ने आपसी विरोध होने के बावजूद एकजुट होकर सिक्ख लहर का डटकर विरोध करना आरंभ कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी को इस संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। बादशाह जहांगीर द्वारा श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करने हेतु दिए गए फैसले को जायज ठहराने के लिए जो तुजक-ए-जहांगीरी में दर्ज है, वह इस तथ्य की पुष्टि करता है।

जिन्हें धर्म प्यारा था, वे बलहीन होने के कारण धर्म की रक्षा करने से असमर्थ थे। कश्मीरी ब्राह्मण पंडित कृपा राम के नेतृत्व में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में फरियादी बनकर पहुंचे। गुरु साहिब ने उनका हाथ थामा— *''बाहें जिन्हां दी पकड़ीए सिर दीजै बांहे न छोड़ीए।''* का महान् कौतुक बलिदान देकर किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस शहीदी के बारे में इस प्रकार बयान करते हैं :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥

कीनो बडो कलू महि साका ॥. . . १३ ॥१५ ॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक हालात के बारे में अपनी बाणी में भरपूर जानकारी दी है :

—कादी कूडु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ *(पन्ना ६६२)*
—राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ *(पन्ना १२८८)*
—खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥

(पन्ना ६६३)

भाई गुरदास जी के अनुसार :

—राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई. . .
काजी होए रिसवती वढी लै कै हकु गवाई ।
इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊ जाई ।
वरतिआ पापु सभसि जगि मांही ॥

(वार १:३०)

भारतीय जनता को अपमानजनक जिंदगी से निकालकर नवीन, संतुलित, सर्वधर्म सद्भाव एवं गौरवपूर्ण जीवन मुहैया करवाने हेतु गुरु साहिबान ने सर्वपक्षीय क्रांति का प्रारंभ किया। इस नयी रौशनी के प्रकाश से भारतीय समाज के हर पहलू पर काबिज़ लोगों ने डटकर विरोध करना शुरू कर दिया। इस प्रकार टकराव पैदा हो गया। इस लंबे संघर्ष के दौरान गुरु-परिवारों, असंख्य सिंघ-सिंघनियों, बच्चों, बुजुर्गों को यातनाएं झेलनी पड़ीं, जंगलों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। गुरु साहिबान एवं गुरसिक्खों ने शहादत देकर देश, धर्म, गौरव, स्वाभिमान तथा स्वअस्तित्व को बचा लिया। इन लामिसाल शहीदियों को प्रतिदिन सारा सिक्ख जगत अरदास में याद कर उन महान शहीदों को श्रद्धा और सत्कार भेंट करता है। किसी मशहूर शायर ने ठीक ही कहा है :

न कहूं अब की न कहूं तब की ।. . .
अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ,
सुंनत होती सब की ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों की पावन शहादत दुनिया के इतिहास में सबसे दर्दनाक घटना है। यह दिल को दहला देने वाला घोर पाप था, घिनौने जुल्म का साका था। यह घटना मानव-दरिंदगी का घिनौना चरित्र पेश करती है। साहिबजादों के अंदर जूझ मरने की दृढ़ता उनकी सिक्खी-सिदक की भावना के शिखर को प्रकट करती है।८ पौष, १७६१ बिक्रमी को गुरु जी के दो बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी चमकौर साहिब की जंग में लड़ते हुए शहीद हो गए।१३ पौष, संवत् १७६१ को दो छोटे साहिबज़ादे— बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को सूबा सरहिंद द्वारा जिंदा दीवार में चिनवा कर, घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। इन पावन शहादतों की महानता के बारे में मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है :

जिस कुल, जाति, देश के बच्चे,
दे सकते हैं यों बलिदान ।

उसका वर्तमान कुछ भी हो,
भविष्य है महा महान।

गुरमति के अनुसार आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए मनुष्य को खुद को मिटाने की आवश्यकता होती है। यह मार्ग महान शूरवीरता का मार्ग है। सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खी के मार्ग पर चलने के लिए सिर भेंट करने की शर्त रखी थी। इसी राह पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. की वैसाखी को खालसा पंथ की सृजना की। खालसा संपूर्ण व स्वतंत्र मनुष्य है। गुरबाणी में इसको सचिआर, गुरमुख, ब्रह्म-ज्ञानी, गुरसिक्ख और संत-सिपाही कहा गया है। खालसा सद्गुण भरपूर विलक्षण शख्सियत है। खालसा गुरु को तन, मन और धन सौंप देता है। जब्र-जुल्म के मुकाबले हेतु जूझ मरने से डरता नहीं है खालसा। सतिगुरु जी का इस मार्ग के पथिक के लिए सिद्धांत इस प्रकार है :

—जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै॥
सिरु दीजै काणि न कीजै॥ (पन्ना १४१२)
—सीसु वढे करि बैसणु दीजै
विणु सिर सेव करीजै॥ (पन्ना ५५८)
—तनु मनु काटि काटि सभु अरपी
विचि अगनी आपु जलाई॥ (पन्ना ७५७)
—अरु सिख हों आपने ही मन कौ
इह लालच हउ गुन तउ उचरों॥
जब आव की अउध निदान बनै
अत ही रन मै तब जूझ मरों॥ (चंडी चरित्र)

पहले पहाड़ी राजा और मुगल सलतनत एक साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ भंगाणी के युद्ध में टकराए। फिर पहाड़ी राजा और सूबा सरहिंद गुरु जी के विरुद्ध एकजुट हो गए। १७०४ ई. में मुगल और पहाड़ी राजाओं की फौज ने सामूहिक रूप से श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। घेराव-अवधि लंबी होने के कारण दुश्मन फौज द्वारा गुरु जी के साथ समझौता किया गया। समझौते की शर्त यह थी कि एक बार गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें, उनको बेरोक जाने दिया जाएगा। इसके बारे में लिखित कसमें भी गुरु जी को भेजी गईं। दीना कांगड़ से बादशाह औरंगज़ेब को गुरु जी द्वारा भेजे जफ़रनामे में किए गए ज़िक्र में इन तथ्यों की पुष्टि होती है। गुरु जी औरंगज़ेब को लिखते हैं कि यदि उसको ज़रूरत महसूस हो तो वे उसको किए गए लिखित वादे, खाई गई पवित्र कुरान शरीफ की कसमें भेज सकते हैं :

तुरा गर बबायद कउलि कुरां।
बनिज़दे शुमा रा रसानम हमां। (ज़फरनामा)

गुरु जी के किला खाली कर जाने पर दुश्मन ने सारी कसमें तोड़कर उनका पीछा करना शुरू कर दिया। यह धर्महीन राज-सत्ता का ही नंगा नाच था। बेईमानी, वादा-खिलाफी और दरिंदगी का घिनौना कर्म था। कवि अलामा इकबाल ऐसे हालात के बारे में इस प्रकार लिखते हैं :

जलाल-ए-पातशाही हो कि जमहूरी तमाशा हो,
जुदा हो दीं से सिआसत तो रह जाती है चंगेज़ी।

सरसा नदी के निकट पहुंचते ही घमासान लड़ाई हुई, जिसके दौरान दोनों दलों का भारी जानी और माली नुकसान हुआ। इस घमासान युद्ध के दौरान गुरु जी का परिवार तीन हिस्सों में बिखर

गया। गुरु जी के दो छोटे साहिबज़ादे और माता गुजरी जी जत्थे से एक तरफ चले गए। माता सुंदरी जी और कुछ सिंघ दूसरी तरफ चले गए।

दुनिया की जंगों-युद्धों के इतिहास में यह मात्र एक ही घटना हुई है, जब मर्द-ए-मैदान, शहंशाह-ए-शहंशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास जहां जंग का साजो-सामान— तीर, कृपाण, ढाल, बरछा, छवि आदि थे वहीं गुरमति संगीत के साज— सिरंदा, सितार आदि भी थे। ७ पौष को अमृत वेला हुआ। दुश्मनों ने भारी हमला बोला था। दशम् पातशाह ने अपने बड़े सुपुत्र बाबा अजीत सिंघ जी, भाई जीवन सिंघ (भाई जैता जी), भाई उदे सिंघ को अन्य सिंघों सहित हमलावरों का मुकाबला करने का हुक्म दिया। दूसरी तरफ भाई दया सिंघ आदि को ''अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥'' के अनुसार आसा की वार का कीर्तन करने के लिए कहा। ऐसा कार्य केवल दशमेश पिता ही कर सकते हैं। जब अति कठिन, खतरनाक हालात और मैदान-ए-जंग में भी वे अपना फर्ज़-ए-इलाही नहीं भूले। दुनिया के इतिहास में यह विलक्षण एवं अद्वितीय घटना थी। एक तरफ सरसा नदी में आई बाढ़ और दूसरी तरफ दुश्मनों का ज़ोरदार हमला। चाहे इस युद्ध में सैकड़ों बहादुर सिंघों सहित भाई जीवन सिंघ और भाई उदे सिंघ शहीद हो गए, परंतु फिर भी सिक्खों ने दुश्मन सेना के दांत खट्टे कर दिए। जिस स्थान पर गुरु-परिवार एक-दूसरे से बिछड़ा उस स्थान पर 'गुरुद्वारा परिवार विछोड़ा साहिब' सुशोभित है, जो इतिहास में इस दर्दनाक घटना की याद को संभाले हुए है।

उपरांत सरसा नदी पार कर गुरु जी ने एक दिन रोपड़ के निकट निहंग खान (कोटला निहंग खान) की गढ़ी में बिताया। रात को आगे चल पड़े। दुश्मनों की फौज ने पीछा करना शुरू कर दिया। गुरु जी ने चमकौर की कच्ची गढ़ी में दाखिल होकर मोर्चाबंदी कर ली। गुरु जी के साथ दो बड़े साहिबज़ादे एवं पांच प्यारों सहित लगभग चालीस सिंघ थे। दुश्मन की दस लाख फौज ने गढ़ी को घेरा डाल लिया। सारा दिन जंग होती रही। शाम तक गुरु जी के पास लगभग सारा गोली-सिक्का खत्म हो गया। अब सिंघों ने गढ़ी से बाहर आकर लड़ना शुरू कर दिया। गुरु जी ने बारी-बारी से बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी को पूरे अस्त्र-शस्त्र सजाकर मैदान-ए-जंग में भेजा। बहादुर योद्धाओं वाले जौहर दिखाते हुए साथी सिंघों सहित गुरु जी के दोनों बड़े साहिबज़ादे गुरु जी के सामने मैदान-ए-जंग में शहीद हो गए। बाबा अजीत सिंघ जी ने अभी जवानी में पांव रखा ही था। बाबा जुझार सिंघ जी तो अभी किशोर अवस्था में ही थे। गुरु जी यदि चाहते तो वे मात्र सांसारिक पिता की भांति अपने सुपुत्रों को बचाने के लिए प्रयत्न कर सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। दुनियावी लोग अपने निजी स्वार्थ की खातिर सारे नियम, सिद्धांत और कौमी हितों को भी कुर्बान करने से नहीं गुरेज करते। ऐसे लोगों को इतिहास में घृणा की नज़र से देखा जाता है। गुरु जी के लिए सिंघों और सुपुत्रों के मध्य कोई अंतर नहीं था। गुरु जी द्वारा मैदान-ए-जंग में जूझते हुए खुद को कुर्बान करने की पूरी तैयारी थी, मगर शेष रहते महत्त्वपूर्ण पंथक कार्यों की पूर्ति को मुख्य रखते हुए पांच सिंघों ने गुरु-रूप होकर गुरु जी को गढ़ी

छोड़कर चले जाने का आदेश दिया। खालसे का हुक्म मानते हुए गुरु जी ताली बजाकर, मुगलों को ललकार कर गढ़ी छोड़ कर चल दिए।

करबला की जंग और चमकौर की जंग में एक बड़ा अंतर था। करबला की जंग में दोनों सेनाएं समान गिनती में थीं। चमकौर की जंग दुनिया की सबसे असमान एवं अतुलनीय जंग थी। इस जंग का ज़िक्र करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगज़ेब को भेजे गए ज़फ़रनामे में लिखा है कि भूखे-प्यासे चालीस सिंघ क्या कर सकते हैं, यदि उन पर दस लाख का लश्कर अचानक टूट पड़े?

गुरसन: चिह कारे कुनद्द चिहल नर।
कि दह लक बिआयद बरो बेखबर।

(जफरनामा)

इस तरह की जंगों की मिसालें सिक्ख इतिहास में ही मिलती हैं। महान शहीदों का पावन खून गिरने से चमकौर की धरती चमकौर साहिब बन गई। चमकौर साहिब की ऐतिहसिक जंग की याद में गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब, गुरुद्वारा कच्ची गढ़ी साहिब, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, गुरुद्वारा ताड़ी साहिब, गुरुद्वारा रणजीतगढ़ साहिब सुशोभित हैं। इस महान पावन शहीदी स्थान पर प्रत्येक वर्ष सिक्ख संगत जोड़-मेले के रूप में एकत्र होकर महान शहीदों को श्रद्धा और सत्कार भेंट करती है।

अल्ला यार खान योगी तो धर्म-यात्रा के लिए दुनिया के तीर्थ-स्थानों से साहिबज़ादों के शहीदी स्थानों को उच्चतम मानते हैं, क्योंकि ऐसी शहीदी दुनिया के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई। योगी जी इस प्रकार लिखते हैं :

बस एक हिंद में तीर्थ है यात्रा के लिए।
कटाए बाप ने बच्चे जहां खुदा के लिए।

साहिबज़ादों की लामिसाल शहीदी को याद करते हुए जब हम अपने इर्द-गिर्द नज़र डालते हैं और सिक्ख कौम में आ चुकी घोर गिरावट को महसूस करते हैं तो सिर शर्म से झुक जाता है। गुरु जी ने अपने लखते-जिगर साहिबज़ादों को शहीद करवाकर भारतवासियों और सिक्ख कौम को ज़िंदगी प्रदान की। साहिबज़ादों ने अपने शीश भेंट कर भारत के स्वाभिमान, गौरव और सभ्याचार को बचाया, परंतु हम अपने और अपनी संतान के दुनियावी सुख, आराम, वक्ती शानो-शौकत के लिए तत्पर हैं। वे कौमें दुनिया के नक्शे से मिट गईं जो खुदगर्जी के कारण अपने धार्मिक सिद्धांत, महान विरासत, इतिहास और शहीदों को अनदेखा कर अपनी दुनियावी लालसायों को पूरा करने में गलतान हो गईं। इसके साथ ही पंथ-विरोधी शक्तियां तरह-तरह की साज़िशें और मनगढ़त कहानियां बनाकर सिक्खी-सिद्धांत, सिक्ख विरासत और सिक्ख रहित मर्यादा को ठेस पहुंचाने हेतु पूरी तरह से तत्पर हैं। हमें इस खतरे से सावधान रहने की आवश्यता है।

आओ! हम अपने महान सिद्धांत और विरासत के असली वारिस बनने का फर्ज़ अदा करें और साहिबजादों की शहादत से शिक्षा लेते हुए अपने जीवन को अनमोल बनाएं! अपने देश व कौम के गौरव, स्वाभिमान एवं शान को ऊंचा करें! रौशन करें!

साका चमकौर एवं साका सरहिंद

*-डॉ. गुरविंदर कौर**

नि:संदेह शहीद किसी भी कौम की बहुमूल्य सम्पदा होते हैं। ये तो किसी कौम की जीती-जागती ज़मीर की आवाज तथा हक-सच की लड़ाई में मशाल की भांति होते हैं। सिक्ख इतिहास अद्वितीय कुर्बानियों का गौरवमयी इतिहास है। सिक्ख कौम में श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के बाद असंख्य सिक्खों ने शहीदियां दी हैं, परंतु साहिबजादों की शहीदी की तसवीर जब भी आंखों के सामने आती है तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए लासानी शहादत दी जो सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में दर्ज़ है। एक सिक्ख विद्वान के अनुसार, ''साहिबजादों की शहादतें चेतन स्वरूप में स्व-सृजित तथा रूपमान किए बहादुरी के कारनामे थे, जो कौम और देश का गौरव बने। इनके अंदर गुरु-पिता, गुरु-दादा, गुरु-विरासत से प्राप्त नाम-रंग की शूरवीरता थी।

सिक्खों द्वारा हर वर्ष दिसंबर माह में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों की लासानी शहादत को पूर्ण श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जाता है। समूह सिक्ख जगत ने दिसंबर, २००४ ई. में साहिबजादों की पावन शहीदी की तीसरी शताब्दी मनाई है।

बेशक तीन शताब्दियां बीत गई हैं किंतु हर वर्ष लाखों श्रद्धालु साहिबजादों की पवित्र याद में शहीदी जोड़-मेले भारी उत्साह के साथ मनाते आ रहे हैं। संगत श्रद्धा-सुमन भेंट करने के लिए भारी सर्दी में चमकौर साहिब तथा फतिहगढ़ साहिब पहुंचती है। पवित्र स्थानों को जाने वाली सभी सड़कों पर जगह-जगह पर लंगर एवं छबीलें लगाकर गुरु-प्यारे हाथ जोड़े संगत को रोक कर सेवा प्रवान करने के लिए विनती करते दिखाई देते हैं, ताकि वे अद्वितीय शहीदों को श्रद्धा-सुमन भेंट करने आने वालों की लंगर आदि से सेवा कर सकें। यह सिलसिला सदैवकालीन चलता रहेगा, क्योंकि एक शायर का कथन है :

शहीदों की कत्लगाह से क्या बेहतर काबा?
शहीदों की खाक पे तो खुदा भी कुर्बान होता है।

चार साहिबजादों की लासानी शहादत संबंधी विचार करने से पहले उनके जीवन के बारे में संक्षिप्त रूप में जानना आवश्यक लगता है।

संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों— बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा जोरावर सिंघ जी तथा

**गांव-डाकखाना : सूलर, ज़िला पटियाला—१४७००१*

बाबा फतिह सिंघ जी का जन्म क्रमशः सन् १६८७, १६९०, १६९६ तथा १६९९ ई. में हुआ। छोटी आयु में महान कारनामे करते हुए शहीद होने के कारण सिक्ख संगत इनके नाम के साथ 'बाबा' शब्द लगाकर सम्मान भेंट करती है। गुरु जी ने अपने साहिबजादों के लिए श्री अनंदपुर साहिब में रहते हुए धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक तंदरुस्ती, घुड़सवारी, तीरंदाजी तथा तेग, नेजे आदि शस्त्रों की शिक्षा का भी विशेष प्रबंध किया।

बाबा अजीत सिंघ जी की निपुणता संबंधी इतिहास में एक घटना का जिक्र आता है कि एक दिन गुरु-दरबार में देवदास नाम का एक नौजवान ब्राह्मण फरियाद करने आया कि उसकी नवब्याही पत्नी को बस्सी गांव के नजदीक रास्ते में जाते समय पठानों ने छीन लिया है। उसकी मदद की जाए तथा उसकी पत्नी को वापिस दिलाया जाए। गुरु साहिब ने साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी को हुक्म दिया कि वह कुछ सिंघों को साथ लेकर बस्सी के पठान जाबिर खान से इस ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाकर इसके हवाले करे तथा जाबिर खान को उसके किए की सजा दे। कहते हैं कि साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने १०० घुड़सवार सिंघों के दस्ते को साथ लेकर सुबह होने से पूर्व ही जाबिर खान की हवेली को जा घेरा। दरवाजा तोड़कर अंदर से जाबिर खान को पकड़ कर घोड़े पर बांध लिया तथा ब्राह्मण की पत्नी को पठान की कैद से आजाद करवा कर वापिस श्री अनंदपुर साहिब आ गए। ब्राह्मण की पत्नी उसके हवाले की। कुकर्मी जाबिर खान को उसके नीच कर्मों की कड़ी सजा दी गई। गुरु-पिता साहिबजादे के इस दिलेराना काम पर बहुत खुश हुए। अपने गुरु-पिता की देखरेख में रहते हुए चारों साहिबजादों ने सिक्खी की जीवन-जांच दृढ़ की।

आओ जाने, उन हालातों की पृष्ठभूमि के बारे में जिसके कारण शहीदी साका हुआ :—

शहादत की पृष्ठभूमि : साहिबजादों की शहादत की पृष्ठभूमि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा की गई खालसा पंथ की सृजना के साथ जाकर जुड़ती है। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा आरंभ किए कार्य को संपूर्णता प्रदान करने के लिए गुरु जी ने संवत् १७५६ की वैसाखी को श्री अनंदपुर साहिब में विशाल एकत्रता कर पांच प्यारों का चयन किया तथा उनको अमृत की दात प्रदान की। फिर उनसे स्वयं अमृत छककर 'आपे गुर चेला' की मर्यादा चलाई। गुरु जी के दोनों बड़े साहिबजादों ने भी अमृत-पान किया तथा तैयार-बर-तैयार सिंघ सजे। कथित विभिन्न जाति के सिक्खों को एक ही बाटे में से अमृत छकाकर ऊंच-नीच, जात-पांत का भेदभाव मिटा कर सभी को शस्त्रधारी बना दिया। एक अकाल पुरख की उपासना करने तथा वहमों-भ्रमों का त्याग करने का हुक्म दिया। यह सब कुछ तथाकथित ऊंची जाति वाले पंडितों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा राजपूतों के मन को न भाया। पहाड़ी राजा भी गुरु जी की बढ़ती ताकत से भयभीत हो गए। उन्होंने गुरु जी द्वारा चलाई लहर को अपनी राज्य-सत्ता

तथा धर्म के लिए अति खतरनाक समझा, इसी लिए वे अंदरखाते गुरु जी को खत्म करने के मंसूबे बनाने लगे। उनको पता था कि उनकी फौज गुरु जी के बहादुर सिंघों का मुकाबला नहीं कर सकती, इसलिए उन्होंने फैसला किया कि सरहिंद के नवाब से फौजी सहायता प्राप्त की जाए। नवाब वजीर खान को चिट्ठी लिखकर विनती की गई कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मुगल सरकार तथा आपके लिए भी खतरा हैं, इसलिए इस खतरे का मुकाबला मिलकर करने के लिए फौज भेजी जाये। नवाब ने पैंदे खान तथा दीना बेग की कमान तले दस हजार फौज भेज दी। उन्होंने बाईधार के राजाओं की बीस हजार फौज के साथ मिलकर गुरु जी पर हमला कर दिया। लड़ाई में पैंदे खान गुरु जी के हाथों मारा गया। दीना बेग जख्मी होने पर भाग गया। शाही फौज भाग गई।

राजा भीमचंद ने अन्य पहाड़ी राजाओं से मशविरा किया कि बहुत सारी फौज इकट्ठी कर श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया जाये, ताकि अंदर रसद-पानी बंद कर गुरु जी को हार मानने के लिए मजबूर किया जा सके। उसने गुरु जी को एक लंबी चिट्ठी लिखकर कहा, ''या तो मेरी रियासत में से निकल जाओ या मेरी प्रजा बनकर मेरे अधीन होकर रहो और टके भरो।'' *(प्रो. करतार सिंघ कृत सिक्ख इतिहास, भाग पहला, पृष्ठ ४२२)* जब गुरु जी ने दोनों बातें मानने से इनकार कर दिया तो राजा भीमचंद ने अन्य राजाओं, मुसलमान गुज्जरों तथा रंघड़ों को साथ लेकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। किले का दरवाजा तोड़ने के लिए मस्त शराबी हाथी को आगे भेजा। भाई बचित्तर सिंघ ने पूरे जोर के साथ नेजा उसके माथे में मारा तो वह चिंघाड़ता तथा अपनी ही फौज को रौंदता हुआ भाग गया। सारी फौज में भगदड़ मच गई।

अब पहाड़ी राजाओं ने मुगल बादशाह औरंगजेब को गुरु जी के विरुद्ध भड़काया तथा मदद हेतु शाही फौज की सहायता के लिए विनती की। उसने सूबा लाहौर तथा सूबा सरहिंद को हुक्म भेजा कि पहाड़ी राजाओं को साथ लेकर गुरु जी पर तुरंत हमला किया जाये और हराये बिना जंग बंद न की जाये। इस हुक्म के अनुसार भारी फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर चढ़ाई कर दी। एक तरफ लाखों की फौज एवं मुलखईया था तथा दूसरी तरफ सिक्ख फौज की गिनती दस हजार के लगभग थी। खालसा फौज ने बेमिसाल वीरता तथा दृढ़ता के साथ मुकाबला किया। श्री अनंदपुर साहिब में हुई लड़ाइयों में बाबा अजीत सिंघ जी ने बहादुरी के अद्भुत कौशल दिखाए। लगभग छः माह तक जंग जारी रही, परंतु हार-जीत का फैसला न होता देखकर राजाओं तथा मुगल फौज के जरनैलों ने गुरु जी को किले में से बाहर निकालने की चाल चली। एक ब्राह्मण और एक मौलवी को जामिन बनाकर भेजा, जिन्होंने गीता एवं कुरान की कसमें खाकर कहा कि अगर गुरु जी किला छोड़कर चले जायें तो उनके रास्ते में कोई रुकावट खड़ी नहीं की जायेगी। गुरु जी उनकी बुरी नीयत को जानते थे,

इसलिए परखने के लिए कुछ बैलगाड़ियां कबाड़ से भरकर, ऊपर रेशमी चादर डालकर बाहर भेज दीं। लालची मुगलों ने समझा कि गुरु-घर का खजाना जा रहा है। वे उन बैलगाड़ियों पर टूट पड़े, परंतु उन्हें शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा। इससे उनकी झूठी कसमों की पोल खुल गई।

कुछ दिनों के बाद उन्होंने गुरु जी के पास इस भूल के लिए क्षमा-याचना-पत्र भेजा तथा किला खाली करने की पुनः विनती की। पहाड़ी तथा मुगल फौज के अधिकारियों ने गाय एवं कुरान की कसमें खाकर गुरु जी से कहा, ''आप एक बार किला छोड़ जायें। आपके इस तरह करने से हमारी इज्जत बनी रहेगी। आप अमन-चैन से चले जाना। हम अपनी फौज लेकर वापिस चले जायेंगे।''

श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना तथा गुरु-परिवार का बिछड़ना : गुरु जी के सिक्ख कई दिनों की भूख तथा संघर्ष के कारण थके हुए थे। उन्होंने माता गुजरी जी को मध्यस्थ बना कर गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ कर अन्यत्र जाने के लिए मना लिया। माता जी एवं सिक्खों के बार-बार कहने पर गुरु जी ने ६ पौष, संवत् १७६१ (१७०४ ई.) की सर्दी की रात को परिवार तथा सिक्खों सहित किला खाली कर दिया और रोपड़ की तरफ चल पड़े। गुरु जी के किले में से निकलते ही दुश्मन फौज ने अपनी कसमें तोड़कर गुरु जी पर हमला कर दिया। रात के अंधेरे तथा बारिश में सरसा नदी के किनारे घमासान युद्ध हुआ। अनेक सिंघों ने शूरवीरता के साथ दुश्मन फौज का मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त की।

अमृत वेले गुरु जी ने नितनेम के अनुसार 'आसा की वार' का पाठ-कीर्तन किया। इसके उपरांत सरसा नदी पार करने की तैयारी की गई। बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ जी ने कुछ सिंघों के साथ दुश्मन फौज को रोके रखा। शेष साथी सिंघ नदी में घुस गए। इस समय नदी का उफान जोरों पर था। गुरु जी का सारा सामान तथा बहुमूल्य साहित्य-संग्रह सरसा नदी में बह गया। गुरु जी के माता जी तथा छोटे साहिबजादे गुरु जी के संग से बिछड़ गए। रसोइए गंगू के कहने पर माता जी एवं छोटे साहिबजादे उसके साथ उसके गांव खेड़ी (सहेड़ी) चले गए। गुरु जी रोपड़ की ओर चले गए तथा माता सुंदरी जी एवं माता साहिब कौर जी भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली की तरफ चले गए। गुरु साहिब बड़े साहिबजादों तथा अन्य लगभग ४० सिंघों के साथ चमकौर साहिब पहुंच गए। यहां पर चौधरी बिधीचंद की गढ़ीनुमा कच्ची हवेली थी। मारोमार करती हुई पीछा कर रही शाही फौज का सामना करने के लिए गुरु जी ने इसमें युद्ध के पक्ष से मोर्चाबंदी कर ली।

बड़े साहिबजादों की शहादत : दुश्मनों ने भारी फौज के साथ चमकौर की गढ़ी को घेर लिया। एक तरफ लाखों की गिनती में मुगल सेना और दूसरी तरफ गुरु जी के लिए कुर्बान होने वाले केवल ४० जांबाज सिक्ख। वे कुछ समय तक तीरों की बौछार से दुश्मन को गढ़ी से दूर रखने में सफल हो गए।

जब तीर खत्म होने को आ गए तो गुरु जी पांच-पांच सिंघों को जत्थे के रूप में दुश्मनों के विरुद्ध जूझने के लिए मैदान-ए-जंग में भेजने लगे, जो जैकारों की गूंज में वैरियों पर टूट पड़ते तथा सैकड़ों सिपाहियों को मौत के घाट उतारते हुए स्वयं शहीद हो जाते। जब काफी सिंघ शहीद हो गए तो शेष बचे सिंघों ने गुरु जी से विनती की कि वे रात के अंधेरे में साहिबजादों को साथ लेकर गढ़ी से बाहर निकल जायें। गुरु जी ने उत्तर दिया कि आप सभी मेरे पुत्र हो। फिर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी को अपने हाथों से शस्त्रों से सुसज्जित किया तथा आशीर्वाद देकर पांच सिंघों के साथ मैदान-ए-जंग में भेजा। साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने अपनी बहादुरी के ऐसे करतब दिखाए कि शत्रु-दल दंग रह गया तथा बचाओ-बचाओ पुकारने लगा। आखिरी दम तक जूझते हुए बाबा अजीत सिंघ जी तथा अन्य सिंघों ने शहादत प्राप्त की।

अपने बड़े भाई की बहादुरी से उत्साहित होते हुए छोटे साहिबजादे बाबा जुझार सिंघ जी ने भी अपने बड़े भाई के पद-चिन्हों पर चलने के लिए गुरु-पिता से जंग में जाने की आज्ञा मांगी। इस बातचीत को शायर योगी अल्ला यार खान ने इस तरह बयान किया है :

इस वक्त कहा नन्हें से मासूम पिसर ने :—

''रुखसत हमें दिलवाओ पिता, जायेंगे मरने !
भाई से बिछड़ कर हमें, जीना नहीं आता।
*सोना नहीं, खाना नहीं, पीना नहीं भाता !''*९६।

पिता-गुरु जी का उत्तर था :

''मरने से किसी यार को, हमने नहीं रोका।
फरजंदि वफादार को, हमने नहीं रोका।
खुशनूदीइ करतार को, हमने नहीं रोका।
अब देखिए सरकार को, हमने नहीं रोका।
तुमको भी इसी राह में, कुर्बान करेंगे !
*सद शुक्र है हम भी कभी, खंजर से मरेंगे !*९८।...
''लो जाओ, सिधारो ! तुम्हें करतार को सौंपा !...
सिक्खी को उभारो, तुम्हें करतार को सौंपा !
वाहिगुरु अब जंग की, हिम्मत तुम्हें बखशे !
*प्यासे हो जात, जाम-ए-शहादत तुम्हें बखशे !''*१०६। *(गंजि-शहीदां)*

पिता-गुरु ने अपने दूसरे साहिबजादे को भी आशीष देकर पांच सिंघों के साथ खुशी-खुशी से जंग-ए-मैदान में भेजा। तीरों की बौछार तले बाबा जुझार सिंघ जी आगे बढ़ते हुए वैरियों का नाश करते रहे और अंत में साथियों सहित शत्रुओं के साथ जूझते हुए शहीदी प्राप्त की। दशमेश पिता ने गढ़ी में से अपने सुपुत्रों की बहादुरी के कारनामे देखे और फिर शहीद होते देखकर अकाल पुरख का शुक्राना किया कि ''दोनों साहिबजादे सिक्खी-सिदक में पूरे उतरे हैं तथा इम्तिहान में पास हुए हैं। तेरी अमानत तुझे ही सौंप दी !'' है कोई संसार के इतिहास में ऐसी मिसाल किसी अन्य रहबर की, जिस पर से उसके अनुयायी अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार हों तथा वो अपने बच्चों को आंखों के सामने शहीद होता देखकर परमात्मा का शुक्राना कर रहा हो !'' ये दोनों शहीदियां ८ पौष, संवत् १७६१ (१७०४ ई.) को हुईं। ''संसार के युद्धों के इतिहास में

कहीं भी ऐसे उदाहरण नहीं मिलते जहां मात्र ४० शूरवीरों ने लाखों की गिनती में शाही सेना से लोहा लिया हो। 'सवा लाख से एक लड़ाऊँ' का नजारा चमकौर की गढ़ी में प्रत्यक्ष हुआ।'' (डॉ. जगजीत सिंघ, सिक्ख फुलवाड़ी, मासिक, दिसंबर २०००, पृष्ठ १५)

छोटे साहिबजादों की शहादत : जैसे कि उपरोक्त जिक्र किया गया है कि सरसा नदी की जंग के उपरांत दोनों छोटे साहिबजादे अपनी दादी मां माता गुजरी जी सहित गंगू रसोइए के साथ उसके गांव सहेड़ी चले गये। जब रात को माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादे सो रहे थे तो गंगू की नीयत खराब हो गई। उसने मोहरों वाली थैली चुरा ली। सुबह होने पर जब माता जी ने पूछा तो नमक-हराम गंगू ने साफ इनकार कर दिया। खुद को सच्चा साबित करने के लिए वो ऊंची आवाज़ में शोर मचाने लगा। उसने मुगल हुकूमत से इनाम हासिल करने के लिए माता जी तथा मासूम बच्चों को गिरफ्तार करवा दिया। गंगू की बदनीयत के कारण मासूम बेदोश साहिबजादों को पौष माह की ठंडी रातों में दादी मां के साथ ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया। माता गुजरी जी दिसंबर माह की बर्फ जैसी ठंडी रात में अपने पोतों को अपने सीने के साथ लगाकर गरमाती तथा सुलाने का यत्न करती रहीं। साथ ही सिंघों की साखिआं सुना-सुनाकर उनमें वीरता का जज़्बा भरती रहीं, ताकि वे अगले दिन हाकिमों के सामने डगमगा न जायें। अगले दिन साहिबजादों को सरहिंद के नवाब की कचहरी में पेश करने का फरमान जारी हुआ। दादी मां ने अपने पोतों को प्यार से तैयार किया और कहा, ''अपने धर्म को अपनी जान वार कर भी कायम रखना। आप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के शेर बच्चे हो, जिन्होंने जालिमों से कभी हार नहीं मानी। तुम दादा श्री गुरु तेग बहादर जी के पोते हो, जिन्होंने धर्म की रक्षा की खातिर अपना शीश कुर्बान कर दिया। देखना, कहीं वजीर खान द्वारा दिए भय एवं लालचों के कारण धर्म के प्रति कमजोरी न दिखा जाना।'' दोनों साहिबजादों ने हिम्मत से जवाब दिया, ''धंन भाग हमारे हैं माई। धरम हेत तन देकर जाई।'' नवाब के सिपाही साहिबजादों को लेने आ गए।

साहिबजादों को वजीर खान की कचहरी में पेश किया गया। खाफी खान इतिहासकार आंखों देखा हाल लिखता है कि एक साजिश रची गई, जिसके अनुसार उनको पेश होते समय छोटे दरवाजे में से निकाला गया, ताकि स्वाभाविक ही उनका सिर झुक जाये। जब वे सिर झुका कर गुजरेंगे तो तालियां मार कर एलान कर दिया जाएगा कि साहिबजादों ने मुगल सरकार के आगे सिर झुकाकर हार मान ली है। मगर आत्मिक तौर पर बलवान साहिबजादों ने छोटे दरवाजे से गुजरते समय कचहरी में दाखिल होने पर पहले पांव आगे निकाले और फिर गरजती आवाज में 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि' बुलाई। साहिबजादों के चेहरों का जाहो-जलाल देखकर सबकी आंखें चुंधिया गईं। दीवान सुच्चा नंद ने कहा, ''बच्चो! नवाब

साहब को झुककर सलाम करो।'' साहिबजादों ने जवाब दिया कि ''उनका सिर अकाल पुरख के बिना किसी के आगे नहीं झुक सकता।'' नवाब ने साहिबजादों को इसलाम धर्म कबूल करने के लिए कहा और मना करने पर उन्हें मृत्यु का भय दिया। यह भी कहा गया कि तुम्हारे दोनों बड़े भाई तथा पिता जी अपने सभी सिक्खों सहित मारे गए हैं। तुम अपनी जान बचा सकते हो। तुम्हें बहुत सुख-आराम से पाला जायेगा तथा जागीरें दी जायेंगी। तुम लोग कलमा पढ़कर मुसलमान हो जाओ। अगर नहीं मानोगे तो मारे जाओगे।''

साहिबजादों ने बेझिझक होकर जवाब दिया, ''हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संतान हैं तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पोते हैं। हम धर्म की रक्षा के लिए शहीद होना जानते हैं। हम अपना धर्म छोड़कर जीने के लिए तैयार नहीं। आपका जैसे दिल करता है, कर लो।'' (सिक्ख इतिहास, पृष्ठ ४२७-२८) इस समय बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतिह सिंघ जी के चेहरे पर डर का कोई भी चिन्ह नहीं था। साहिबजादों के दिलेरी भरे उत्तर को सुनकर चारों ओर सन्नाटा छा गया। अहंकारी नवाब को गुस्सा आ गया। दीवान सुच्चा नंद ने उसे और भड़काया कि ''ये सांप के बच्चे हैं! ये रहम के लायक नहीं! बड़े होकर ये और भी मुश्किलें खड़ी करेंगे। कांटे उगते ही तीक्ष्ण होते हैं। इन पर रहम मत करो!'' इतिहासकारों ने शेर मुहम्मद खान के भाई की मृत्यु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों होने का जिक्र किया है। शेर मुहम्मद खान अपने भाई की मृत्यु का बदला पिता की जगह मासूम बच्चों से लेने को कायरता समझता था। उसने साहिबजादों को मारने के विरोध में 'हा का नारा' मारा।

११ तथा १२ पौष को दो दिन साहिबजादों को कचहरी में बुलाया जाता रहा तथा लालच एवं डरावे दिये जाते रहे, परंतु साहिबजादे धर्म-पथ से नहीं डगमगाए। दीवान सुच्चा नंद ने जब साहिबजादों से पूछा कि ''अगर आपको छोड़ दिया जाये तो आप क्या करोगे?'' साहिबजादों का उत्तर था कि ''हम बड़े होकर सिक्खों को इकट्ठा कर इस जुल्मी राज्य के विरुद्ध लड़ेंगे तथा तब तक लड़ते रहेंगे जब तक जालिमों का खातिमा नहीं कर लेते या खुद शहीद नहीं हो जाते। आखिर नवाब ने हुक्म दे दिया कि साहिबजादों को दीवार में जिंदा चिन दिया जाये। सिर पर मृत्यु का साया मंडरा रहा था किंतु गुरु जी के साहिबजादे अडोल थे। योगी अल्ला यार खान के शब्दों में :

हाथों में हाथ डाल के दोनों वे नौनिहाल।
कहते हुए जुबां से बढ़े 'सति श्री अकाल'।
चेहरों पे गम का नाम न था और न था मलाल।
जाठहरेसरपेमौतके,फिरभीनथाख्याल।...१०७।
शेर बच्चों ने ललकार कर कहा :
हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का हैं पौधा लगा चले।
गद्दी से ताजो-तख्त बस अब कौम पायेगी।

दुनिया से जालिमों का निशां तक मिटायेगी।१०९।

नवाब के हुक्मानुसार १३ पौष को छोटे साहिबजादों को दीवार में चिन कर शहीद कर दिया गया। अंतिम सांस तक वे वाहिगुरु का जाप करते रहे। उन्होंने चढ़दी कला में रहकर मौत को गले लगा लिया। पोतों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने अकाल पुरख के चरणों में शुक्राने की अरदास की तथा वे भी परलोक गमन कर गयीं। सरकारी शर्त के अनुसार दीवान टोडर मल्ल ने मोहरें बिछाकर जमीन खरीदी और छोटे साहिबजादों तथा माता गुजरी जी के मृतक शरीरों का पूर्ण मर्यादा व सत्कार के साथ अंतिम संस्कार कर दिया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा श्री जोती सरूप साहिब' सुशोभित है।

छोटे साहिबजादों की अद्वितीय शहादत की दर्दनाक वार्ता भाई नूरा माही नामक कासिद ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भाई राय कल्हा के निवास स्थान पर रो-रोकर, हिचकियां लेते हुए सुनाई, तो सुनने वालों की चीखें निकल गईं। गुरु जी अडोल अपने लखते-जिगरों की शहादत तथा माता जी के परलोक-गमन कर जाने का वृत्तांत सुनते रहे। वृत्तांत सुनने के पश्चात आपने तीर से कांस का पौधा उखाड़ा और फरमाया कि समझो, अब मुगल राज्य की जड़ उखड़ गई। जिस शासन में मासूमों पर जुल्म हों वो शासन खत्म हो गया समझो! इस संदर्भ में प्रिंसीपल हरिभजन सिंघ लिखते हैं कि साहिबजादों की लासानी शहादत की घटना मुगलों के जुल्मी राज्य की जड़ उखाड़ने का सबसे बड़ा कारण बनी। छोटे साहिबजादों के इस बड़े साके ने सिक्खी के महल की नींव और मजबूत की तथा धक्केशाही करने वाले क्रूर शासन की जड़ें उखाड़ने के लिए सिंघों में बेपनाह जोश तथा दृढ़ता का संचार किया। आखिर खत्म हो गया वो मुगल राज्य तथा खत्म हो गये जालिम सूबेदार वजीर खान और अनेक अत्याचारी। छोटे साहिबजादों की शहादत आज भी लाखों दिलों में धर्म पर कुर्बान होने की चाह भरती हुई जगत-कल्याण के लिए प्रकाश-स्तंभ का काम कर रही है और करती रहेगी। साहिबजादों की अद्वितीय शहादत से ऐसी जागृति आई कि निरीह जनता ने गुरु जी से अमृत की दात लेकर भारत में से मुगल हुकूमत के पैर उखाड़ दिये। आज भी क ौम को साहिबजादों की लासानी शहादत से आदर्श नेतृत्व लेना चाहिए। मौजूदा समय में जो गिरावट आई है उसे रोकने के यत्न दृढ़ता से करने चाहिए। हमारा साहिबजादों का शहीदी दिवस मनाना तभी सार्थक है अगर हम साहिबजादों द्वारा छोड़े पद-चिन्हों पर चलने का प्रण करें तथा नेक नीयत से उस प्रण को निभायें!

साधो कउन जुगति अब कीजै

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी महान् आध्यात्मिक चिंतक और गंभीर धर्म-साधक रहे हैं। ५ वैसाख वदी, संवत् १६७८ बिक्रमी तद्नुसार १ अप्रैल, सन् १६२१ ई. को श्री अमृतसर नगर में 'गुरु के महल' नामक स्थान पर पिता छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब एवं माता नानकी जी के घर जन्म लेने वाले श्री गुरु तेग बहादर जी बचपन से ही आध्यात्मिक रुचियों वाले थे। सन् १६३४ ई. में मात्र तेरह वर्ष की आयु में करतारपुर के युद्ध में ऐसी अद्भुत वीरता दिखाई कि पिता छठम पातशाह ने आपका नाम 'तिआग मल्ल' से 'तेग बहादर' कर दिया।

नवम् पातशाह का स्वभाव इतना निर्लिप्त और संयमित था कि गुरु-पिता के ज्योति-जोत समाने के तुरंत बाद आप सुपत्नी माता गुजरी जी के साथ श्री अमृतसर के निकट 'बकाला' गांव आकर अटूट साधना में लीन हो गये। २१ वर्ष की सतत् साधना के उपरांत गुरु जी ने भाई मक्खण शाह लुबाणा के प्रयास से स्वयं को पुनः उजागर किया और सन् १६६५ ई. में गुरुआई पर गुरु-रूप में सुशोभित हुए।

नवम् पातशाह की बाणी से निःसृत जीवन-दर्शन :

नवम् पातशाह ने ५९ शबद एवं ५७ सलोकों का उच्चारण किया, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १५ रागों 'महला नौवां' शीर्षक से दर्ज हैं।

गुरु साहिब की बाणी वैराग्य-प्रधान है। संसार की नश्वरता, माया की क्षुद्रता, सांसारिक संबंधों की असारता, मोह-मद की आधारहीनता, जीवन की क्षणभंगुरता आदि गुरु जी की बाणी के प्रमुख विषय रहे हैं :-

संसार की नश्वरता :

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥

(पन्ना १४२७)

माया की क्षुद्रता :

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥

(पन्ना १४२६)

सांसारिक संबंधों की असारता :

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१ ॥रहाउ ॥
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥

(पन्ना ६३३)

मोह-मद की आधारहीनता :

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥

(पन्ना १४२८)

जीवन की क्षणभंगुरता :

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥

(पन्ना १४२८)

वैराग्य परंतु संसार-त्याग नहीं :

नवम् पातशाह की बाणी वैराग्यमयी है, परंतु यह

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

वैराग्य संसार-त्याग वाला वैराग्य नहीं है बल्कि संसार में रहते हुए, अपने समस्त कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए निर्लिप्त भाव से संतुलित और संयमित जीवन बिताना है :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
(पन्ना ६८४)

समरसतापूर्ण जीवन के लिए प्रेरणा :

नवम् पातशाह ने निर्लिप्त भाव से संसार में रहते हुए समरसता से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। गुरु जी की बाणी मनुष्य को जीवन बिताने का संतुलित एवं सम्पूर्ण मार्ग दिखाती है।

नवम् पातशाह का फरमान है कि जो जीव सुख-दुख, मान-अपमान, हर्ष-शोक, स्तुति-निंदा आदि से परे रहता है और जिसके लिए स्वर्ग-नरक, अमृत-विष, कंचन-माटी, कंचन-लौह, वैरी-मीत, स्नेह-भय आदि समान है, वही श्रेष्ठ जीवन जीने की सही और उचित युक्ति जान पाता है।

नवम् पातशत ने राग गउड़ी में उच्चरित एक शबद में बड़ा ही स्पष्ट कथन किया है कि जो प्राणी सुख-दुख ,मान-अपमान को समान करके जानता है, हर्ष-शोक से परे रहता है और स्तुति-निंदा को त्याग देता है, वही जग-जीवन के मर्म एवं तत्व को पहचान पाता है। गुरु जी साथ ही साथ यह चेतावनी भी देते हैं कि यह खेल बहुत कठिन है और कोई बिरला ही यह युक्ति जान पाता है :

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै
अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता
तिनि जगि ततु पछाना ॥१ ॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है
किनहूं गुरमुखि जाना ॥ *(पन्ना २१९)*

गुरु जी का स्पष्ट निर्णय है कि जिसे हर्ष-शोक, सुख-दुख स्पर्श नहीं करते, जिसके लिए स्तुति-निंदा, स्वर्ग-नरक, अमृत-विष, वैरी-मीत सब समान होते हैं, वही प्राणी ज्ञानी है और उसी को मुक्त माना जा सकता है :

—हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना
मुकति ताहि तै जानि ॥१५ ॥
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥
(पन्ना १४२७)

—सुखु दुखु जिह परसै नही
लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३ ॥
उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥
(पन्ना १४२७)

ऐसा समरस मति वाला प्राणी प्रभु का रूप हो जाता है और समस्त कष्टों से मुक्त हो जाता है :

हरख सोग परसै जिह नाहनि
सो मूरति है देवा ॥१ ॥
सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ
तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै
लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२ ॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि
तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ
इह बिधि को जो प्रानी ॥ *(पन्ना २२०)*

जिस प्राणी में जीवन के सकारात्मक-नकारात्मक पक्षों के प्रति समान भाव होता है वही

वास्तविक योगी कहलाता है :

पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥
हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥
(पन्ना ६८५)

नवम् पातशाह ने समरसता-प्रधान जीवन जीने के लिए आवश्यक विधि की भी चर्चा की है। गुरु जी का फरमान है कि समरसता प्राप्त करने के लिए संयम की मूलभूत आवश्यकता है :

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत
अचल जाहि ठहरानो ॥
कहु नानक इह बिधि को जो नरु
मुकति ताहि तुम मानो ॥ *(पन्ना ६८५)*

जो समस्त सांसारिकताओं में रहते हुए भी उससे निर्लिप्त रहता है वही अचल अवस्था को प्राप्त कर सकता है :

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥
(पन्ना १४२७)

गुरु साहिब के अनुसार इस समरस-अचंचल-अचल अवस्था को प्राप्त करने की आसान राह यह है कि प्राणी अपनी स्तुति-निंदा के भाव को त्याग दे और सदैव के लिए हरि की कीर्ति को अपने मन में बसा ले :

उसतति निंदा दोऊ परहरि
हरि कीरति उरि आनो ॥ *(पन्ना ११८६)*

नवम् पातशाह के अनुसार जिस मनुष्य पर सतिगुरु की कृपा हो जाये उसी को यह जीवन-युक्ति समझ में आती है :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै
कंचन माटी मानै ॥१ ॥रहाउ ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै
लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ
नाहि मान अपमाना ॥१ ॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि
तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२ ॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी
तिह इह जुगति पछानी ॥ *(पन्ना ६३३)*

इस प्रकार नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी ने मनुष्य को सहज-स्वाभाविक जीवन जीने के लिए सरल और सुगम युक्ति सुझाई है। सुख-दुख, हर्ष-शोक, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, स्नेह-भय की भावनाओं में थपेड़े खाता मनुष्य कभी भी संतुलित जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और सदैव किस्मत के हाथ का खिलौना बना रहता है। यह सहजावस्था, यह समरसतापूर्ण जीवन की स्थिति मात्र संयम और अचल भाव से ही प्राप्त की जा सकती है। सामान्य रूप से देखने पर लगता है कि यह सहज अवस्था प्राप्त करना अत्यंत कठिन और दुष्कर कार्य है, परंतु यह हालत तब तक होती है अब तक गुरु-कृपा से सत्य का साक्षात्कार न हो जाये। जब प्रभु की रजा और उसके हुक्म का सही अर्थों में भान (आभास) हो जाये तो समरसता की स्थिति प्राप्त करना अत्यंत सहज हो जाता है। वैसे भी इसके सिवा जीवन को सहज बनाने का और कोई दूसरा मार्ग है भी नहीं।

वास्तव में नवम् पातशाह ने अपनी बाणी में जो जीवन-सिद्धांत प्रस्तुत किया है उसी के अनुसार उन्होंने अपना सारा जीवन जीया भी। यह जीवन-युक्ति किस प्रकार व्यवहार में लाई जा सकती है, गुरु साहिब का जीवन इसकी जीती-जागती प्रत्यक्ष मिसाल है।

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि . . .

*-डॉ. परमजीत कौर**

संसार में मनुष्य का निवास रैन बसेरे जैसा है। मनुष्य अपने जीवन की नश्वरता को भुलाकर उन कार्यों में उलझा रहता है जो उसको आत्मिक जीवन के मार्ग पर चलने ही नहीं देते। वह अपना सारा जीवन स्त्री-पुत्र, रिश्तेदार तथा विषयों के रस में लिप्त रहकर बिता देता है। वो यह भूल जाता है कि हुकूमत, जमीन-जायदाद, यौवन, सुंदरता, सुंदर महल तथा भौतिक पदार्थ, जिनके मद में वह अपना सारा समय व्यर्थ गंवा रहा है, उसके साथ जाने वाले नहीं हैं। ये सब तो माया का रूप हैं, जो जीव को परमात्मा से दूर कर रहे हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी के उपदेश जीवन-राह से भटके हुए लोगों को सही दिशा-निर्देश देते हैं। त्याग तथा वैराग्य प्रधान होने के कारण गुरु जी की बाणी का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को उसके जीवन तथा संसार की वास्तविकता का आभास करवाते हुए, माया के बन्धनों से निर्लिप्त रहकर आत्मिक जीवन की ओर प्रेरित करना है। जो सत्य है उसको जानकर, समझकर, अज्ञानता के अन्धकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश-पूर्ण जीवन-मार्ग पर चलने से जीवन सुखी तथा परलोक सुहेला (बाधा रहित) हो जाता है।

मानव-शरीर नश्वर है— यह सत्य है। जीव के जन्म के साथ ही मृत्यु उसके साथ जुड़ जाती है अर्थात् जिस क्षण जन्म होता है यह निश्चित हो जाता है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी होनी है। जन्म के समान मृत्यु को भी सत्य स्वीकार कर लेने से मौत का डर समाप्त हो जाता है। गुरु साहिब का फरमान है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥
जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥

(पन्ना १४२९)

माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र, स्त्री आदि रिश्तेदार, जिनके साथ मनुष्य सारी उम्र प्यार करता है तथा जिनके मोहवश कुमार्ग पर चलने लगता है, सब जीवित रहते हुए ही साथ निभाते हैं। जब प्राण निकल जाते हैं तो कोई ज्यादा समय घर में नहीं रखता, तुरंत बाहर निकालने की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। यहां तक कि मनुष्य का अपना शरीर भी साथ नहीं जाता। जैसे प्यासा हिरन रेत को पानी समझ कर उसके पीछे दौड़ता रहता है वैसे ही मनुष्य भौतिक पदार्थों के सुख को स्थायी सुख समझकर उनकी प्राप्ति हेतु व्यर्थ

**६२०, गली नंबर १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

उद्यम करता रहता है। अज्ञानता की नींद में सोये हुए जीव को गुरु जी समझा रहे हैं :

—जाग लेहु रे मना जाग लेहु
कहा गाफल सोइआ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ॥
(पन्ना ७२६)

—सभ किछु जीवत को बिवहार॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि॥ १ ॥रहाउ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि॥ १ ॥
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार॥
(पन्ना ५३६)

—मन रे कहा भइओ तै बउरा॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा॥
(पन्ना २२०)

धन-जायदाद सब कुछ यहीं रह जाता है। इनमें से कुछ भी मृत्यु के समय जीव के साथ नहीं जाता। परमात्मा का नाम ही वास्तविक खजाना है जो मनुष्य के साथ जाता है। नाम की बरकत से मनुष्य की सदाचारक उन्नति होती है, आचरण ऊँचा हो जाता है। वह बुरे कर्म नहीं करता। जीव जैसे कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। उसको अपने कर्मों का लेखा देना पड़ता है। अन्य कोई भी खजाना मनुष्य की इस तरह सहायता नहीं कर सकता। चाहे करोड़ों की जायदाद हो, अनेक सगे-सम्बन्धी हों, मगर अपना लेखा तो स्वयं ही देना पड़ता है। जैसे रेत से बनी हुई दीवार चार दिन भी नहीं टिकती वैसे ही माया के सुख भी रेत की दीवार जैसे ही हैं। इनमें लिप्त हुये, इनके मद में जीवन को व्यर्थ कर रहे जीव को गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं कि हे भाई! अपने मन में यह बात दृढ़ कर लो कि यह सारा संसार स्वप्न जैसा है। इस जगत् को स्वप्न में देखे गये पदार्थों के समान समझो, जो क्षण में नष्ट हो जाते हैं। अभी भी जाग जाओ! अभी ज्यादा कुछ बिगड़ा नहीं है। अपनी शेष आयु परमात्मा के नाम-सिमरन में व्यतीत करो! अन्त में परमात्मा ही सहायक होता है :

—रे नर इह साची जीअ धारि॥
सगल जगतु है जैसे सुपना
बिनसत लगत न बार॥ १ ॥रहाउ॥
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि॥
तैसे ही इह सुख माइआ के
उरझिओ कहा गवार॥१ ॥
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि
भजि ले नामु मुरारि॥
कहु नानक निज मतु साधन कउ
भाखिओ तोहि पुकारि॥ *(पन्ना ६३३)*

—इहु जगु है संपति सुपने की
देखि कहा ऐडानो॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो॥
(पन्ना ११८६)

—कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग॥

कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥

(पन्ना ११८७)

जैसे फूटे हुए घड़े में से पानी धीरे-धीरे निकलता जाता है वैसे ही क्षण-क्षण करके आयु बीतती जाती है, अभी भी जाग जा :

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है
फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥रहाउ ॥
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१ ॥
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥

(पन्ना ७२६)

गुरु-उपदेश को न सुनकर लोभ के अधीन अधिकाधिक धन की आशा में जगह-जगह भटकने वाले, लोगो की खुशामद करने वाले जीव की दशा का वर्णन करते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी फरमान करते हैं कि ऐसे जीव सुख के स्थान पर दुख भोगते हैं। कुत्ते की तरह प्रत्येक द्वार पर भटकते फिरते हैं। परमात्मा का भजन करने की सुधि नहीं है। लोगों द्वारा किये गये उपहास पर भी लज्जित नहीं होते :

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत
आसा लागिओ धन की ॥१ ॥ रहाउ ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत
सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत
नह सुध राम भजन की ॥१ ॥
मानस जनम अकारथ खोवत
लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत
कुमति बिनासै तन की ॥ *(पन्ना ४११)*

सब कुछ जानते-समझते हुए भी कुमति के प्रभाव के अधीन अपना काम स्वयं बिगाड़ने वाले जीव को गुरु जी ताड़ना कर रहे हैं कि तू गुरु के उपदेश को ध्यान से सुन तथा प्रभु की शरण में आकर नाम जप :

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२ ॥
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥

(पन्ना ७२७)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि के वश में हुआ मनुष्य परमात्मा का सामीप्य प्राप्त नहीं कर सकता। श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार काम, क्रोध आदि दोष बुरे मनुष्य की संगति जैसे हानिकारक हैं। इन्हें छोड़ने का यत्न करना चाहिए :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की
ता ते अहिनिसि भागउ ॥ *(पन्ना २१९)*

साध-संगत में आकर नाम-सिमरन करता हुआ जीव अपने मन को काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि विकारों के प्रभाव से मुक्त कर सकता है :

जब ही सरनि साध की आइओ

दुरमति सगल बिनासी ॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि
काटी जम की फासी ॥ *(पन्ना ६३३)*

जीवन को सफल करने तथा नाम-सिमरन के मार्ग पर चलने का तरीका बताते हुए गुरु साहिब समझाते हैं कि रसना से प्रभु के गुण गाओ तथा कानों से सुनो :

रे *मन राम सिउ करि प्रीति ॥*
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥
(पन्ना ६३१)

प्रभु के नाम में ध्यान लगाने से मन की भटकना समाप्त हो जाती है, आत्मिक स्थिरता बन जाती है :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ
करि बैठो बिसरामु ॥१ ॥रहाउ ॥
माइआ ममता तन ते भागी
उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै
गही भगति भगवान ॥ (पन्ना ११८६)

अकाल पुरख के नाम-सिमरन के बिना अन्य किसी भी तरीके से माया के बन्धनों से मुक्ति नहीं मिलती। कलयुग में नाम-सिमरन से ही उद्धार हो सकता है :

कल मै एकु नामु किरपा निधि
जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥
(पन्ना ६३२)

परमात्मा के नाम का सिमरन ही मानसिक कष्ट तथा अशान्ति से बचा सकता है। परमात्मा के नाम का सिमरन वो रास्ता है जो प्रभु के चरणों तक पहुंचाता है। नाम-सिमरन के बिना परमात्मा के साथ सम्बध नहीं बनता। गुरु जी बार-बार ताकीद कर रहे हैं :

—रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
जगत सुख मानु मिथिआ
झूठो सभ साजु है ॥१ ॥ रहाउ ॥
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥. . .
— सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥
(पन्ना १३५२)

हमें उठते-बैठते, सोते-जागते सदैव श्री गुरु तेग बहादर जी की यह शिक्षा याद रखनी चाहिए :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

बिहार के जद्दी सिक्ख : एक अध्ययन

*-स. जगमोहन सिंघ **

पूरबी भारत ख़ास कर बिहार में बसते अलग-अलग वर्ग के सिक्खों के साथ संपर्क होने के कारण मुझे इनके बारे में अध्ययन करने का कई बार मौका मिला है। यहां बसते अलग-अलग वर्ग के लोगों, जनजातीय भाषाओं और अलग-अलग धर्मों एवं विश्वासों के कारण यह इस उप महाद्वीप का सबसे अधिक भिन्नता-विभिन्नता से भरपूर क्षेत्र है। हिंदू, जैन, बुद्ध और सिक्ख धर्म की साझी यह धरती पौराणिक समय की कीमती निशानियों का भरपूर ख़ज़ाना है। बिहार संसार के उक्त चार महान धर्मों का हिंडोला है। यहां हमें बहुत-से पुराने डेरे, आश्रम, स्मारक, मंदिर, गुरुद्वारे तथा अन्य विशेष स्थान मिल जाते हैं, जहां हम अपना आदर-सम्मान और शुक्राना भेंट कर सकते हैं। इस क्षेत्र का इतिहास ग्लोबली महत्ता वाला है।

बिहार को श्री गुरु नानक साहिब तथा अन्य सिक्ख गुरु साहिबान के समय से सिक्ख इतिहास में अपना स्थान प्राप्त करने का अवसर मिला है। श्री गुरु नानक साहिब की पहली उदासी के समय इस क्षेत्र के लोगों की गुरु की सिक्खी के साथ संबंधों की शुरूआत हुई। श्री गुरु नानक साहिब नस्ल, जाति, भाषा के बंधनों से पार विश्वव्यापी मानवता के प्रचारक थे। वे कभी क्षेत्रादि की सीमा के बंधनों में बंध कर नहीं रहे। उन्होंने संसार भर की यात्रा की। जहां भी वे गए अपना नया संसार सृजित किया और अपने बहुत-से घर बनाए। इस क्षेत्र को भी श्री गुरु नानक साहिब के पावन चरणों का पवित्र स्पर्श प्राप्त हुआ। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी, दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और माता सुंदरी जी के सबसे अधिक हुकमनामे पूरबी भारत ख़ास कर बिहार के सिक्खों को संबोधित हैं, जो आज भी देखे जा सकते हैं। इससे इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों के गुरु साहिबान के साथ संबंधों की महत्ता का पता चलता है। इस धरती से संबंधित गुरु-इतिहास के बारे में स्थानीय सिक्खों के मन में कई कथाएं और साखियां बसी हुई हैं जो पुराने सिक्खों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने बच्चों को सुनाई हैं। महान गुरु साहिबान की धर्म प्रचार-यात्रा की साखियां अभी भी लोगों के दिल में ताज़ा हैं, जो उनके मन में गुरु साहिबान के प्रति गहरी श्रद्धा-भावना बनाए रखती हैं।

इस क्षेत्र में सिक्खी स्वरूप की खोज ने मुझे पूरे बिहार सहित पूरबी भारत के क्षेत्र और इससे पार के चक्कर भी लगवाए। निश्चित रूप से पटना साहिब दिल्ली से भिन्न है, परंतु हम धरातल या आबादी की भिन्नता की बात नहीं कर रहे। यह भिन्नता इन क्षेत्रों में बसते लोक-मानसिकता की है। यहां के सिक्खों का धर्म, पंजाब और पश्चिमी संसार के मुकाबले थोड़ा अलग तरह का है। गुरु साहिबान की यात्राओं और इनकी साखियों के प्रभाव ने मेरे अंदर गुरु साहिबान से संबंधित स्थानों पर बार-बार जाने की प्रबल इच्छा पैदा की। गुरु साहिबान द्वारा इस

**प्रभारी, सिक्ख मिशन पूरबी भारत (कोलकाता), धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर। फोन: ९८३१०-५९६७५*

धरती के साथ स्थापित किये पुराने संबंधों की खोज में मैंने विभिन्न स्थानों पर जाना शुरू किया। १९वीं सदी के अंत तक यहां सिक्ख धर्म का मौलिक प्रभाव बहुत प्रबल था। सिक्ख धर्म के प्रचार की मुख्य भूमिका उदासी महंतों द्वारा निभाई गई। इनके अलावा निरमले और ज्ञानी संप्रदायों ने भी इस क्षेत्र में प्रशंसनीय काम किया। ये प्रारंभिक दौर की संप्रदायें हैं, जो सिक्ख दर्शन के प्रचार-प्रबंध की रीढ़ की हड्डी थीं।

बिहार की आबादी का एक बड़ा हिस्सा गुरु साहिबान का उपासक था। इनको नानकशाह-पंथी या नानक-पंथी कहा जाता था। बहुत-से स्थानों पर देखा गया है कि काफ़ी लोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ कर सकते हैं और गुरु की बात समझने के योग्य हैं, मगर अब इनको ढूंढना मुश्किल है। इनमें से ज़्यादातर अपने पुराने धर्म में लौट गए हैं। अगर हम इनकी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को गहराई से देखें तो हमें इनके सिक्ख धर्म के साथ पुराने संबंधों के प्रभाव का पता चल जाता है। मुख्य रूप से उदासी, निरमले और कुछ हद तक ज्ञानी संप्रदाय के प्रचारकों ने लगातार तीन सौ साल तक गुरु साहिबान के संदेश का प्रचार करने का कार्य संभाला। बाद में कार सेवा वाले तथा अन्य सिक्ख जत्थों के मुखिया लोगों ने इस क्षेत्र के साथ संपर्क बनाए रखा। इन्होंने बहुत समर्पण-भाव के साथ काम किया और पूरबी भारत के कोने-कोने तक पहुंच की। इसका प्रभाव चमत्कारी था। बहुत-से स्थानीय राजा, नवाब, जमींदार, व्यापारी और आम लोग इनके श्रद्धालु तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा के अनुयायी बने। ज़मीन के बड़े क्षेत्रफल श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नाम पर डेरों और गुरुद्वारा साहिबान को दान किये गए, ताकि ये संस्थाएं निर्विघ्न रूप से कार्य कर सकें। कई स्थानों पर सिक्खों का 'संगत' रूप में गठन हुआ। आज भी हम ऐसे कई उदाहरण देख सकते हैं, जैसे— पुरानी संगत, नई संगत, बड़ी संगत, छोटी संगत, पक्की संगत, कच्ची संगत, टकसाली संगत, नानकशाही संगत आदि। इससे पता चलता है कि स्थानीय लोग सिक्खी मार्ग के पथिक थे। विभिन्न वर्ग के लोगों ने बड़ी संख्या में सिक्ख धर्म अपनाया। अब जहां तक सांस्कृतिक और विचारधारक पहचान का सवाल है, यह पहचान अब लुप्त होने के किनारे है।

मुझे पूरबी भारत के विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण वर्ग के सिक्खों के साथ कई बार बातचीत करने का मौका मिला। अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले ये सिक्ख आज़मगढ़, बलिआ, बिहार बार्डर के साथ लगते पूरबी उत्तर प्रदेश के वाराणसी के इलाके, सासाराम, केदली चट्टी (ज़िला चतर), शिवनगर (ज़िला वैशाली), मधूड़ी (ज़िला मधुबनी), बरारीहट्ट से महेशवा तक लक्ष्मीपुर और इसके आस-पास के गाँवों, सादलपुर (ज़िला कटिहार), हलहलिया, परवानपुर व गड़गमा (ज़िला अररिया) और बिहार के दूसरे कई बहुत दूर-दराज स्थानों के रहने वाले हैं। पश्चिमी बंगाल में यह मुरारायी (ज़िला वीरभूम), कौंटायी (ज़िला पूरबी मिदनापुर) और आसाम के चापरमुक्ख व बरखोला (ज़िला नओगांव) गाँवों में देखे जा सकते हैं। पूरबी भारत के अलग-अलग हिस्सों में बिखरे ये सिक्ख बाकी सिक्खों की तरह पगड़ी बांधते और केश रखते हैं। ये आपस में और स्थानीय लोगों के साथ अपनी उप-भाषाओं में बातचीत करते हैं, परन्तु जब कोई बाहरी सिक्ख मिलता है तो उसके साथ पंजाबी भी बोलते हैं। कई तो बहुत अच्छी पंजाबी बोल लेते हैं। कई आसानी से ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के शबद पढ़ और

गा लेते हैं। मुझे सिक्ख मिशन कोलकाता (पूरबी भारत) के प्रभारी के रूप में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से इन इलाकों में गुरमति कैंपों का आयोजन करते समय तथा ऐसे ही अन्य काम करते हुए इन सिक्खों के साथ मिलने का अवसर मिला।

श्री गुरु नानक साहिब की पूरबी भारत की यात्रा के समय से इस क्षेत्र में क्षत्रिय सिक्खों की मौजूदगी थी। व्यापार का कंट्रोल उन क्षत्रियों (खत्री) के पास था जिनके पंजाब के साथ सम्बंध थे। नानक-पंथियों के रूप में इन क्षत्रियों के प्राथमिक सहयोग से ही सिक्ख धर्म का प्रचार हुआ। इससे संबंधित हमारे पास अलग-अलग सिक्ख विद्वानों, यूरोपीय और स्थानीय इतिहासकारों के शृंखलाबद्ध उदाहरण मौजूद हैं। बिहार की धरती को श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी के पवित्र चरण-स्पर्श प्राप्त करने का और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश-स्थान होने का विलक्षण गौरव प्राप्त है। यहां सिक्खों की मौजूदगी का इतिहास श्री गुरु नानक साहिब के समय जितना पुराना है। श्री गुरु नानक साहिब ने पूरबी दिशा की उदासी के दौरान बंगाल की तरफ जाते समय इस क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों का भ्रमण किया। पटना साहिब के सालिस राय जौहरी नामक बहुत बड़े सर्राफ़ा व्यापारी, जो श्री गुरु नानक साहिब के पहले श्रद्धालु बने, क्षत्रिय थे। कहा जाता है कि गुरु जी लगभग चार महीने उसके निवास-स्थान पर ठहरे। सालिस राय के सेवक अधरक्का (अरोड़ा जाति) को श्री गुरु नानक साहिब जी ने आशीर्वाद दिया। भाई अधरक्का भी गुरमति फलसफे के मिशनरी प्रचारक बन गए। श्री गुरु अमरदास जी ने यहां भाई गुरदास जी तथा दूसरे महत्वपूर्ण प्रचारकों को भेजा।

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की आमद के समय पटना साहिब और इसके आस-पास बड़ी संख्या में सिक्ख श्रद्धालु मौजूद थे। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब सालिस राय के एक वंशज के घर रहे। बड़ी संगत और छोटी संगत— पटना साहिब में सिक्खों के दो महत्वपूर्ण स्थान थे। भाई अधरक्का के वंशज छोटी संगत के अगुआ थे, जो स्थानीय श्रद्धालुओं के साथ मिल कर श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब और उनके साथी सिक्खों को बड़ी संगत से यहां लेकर आए। पटना साहिब तब भारत के मैनचेस्टर के रूप में जाना जाता था। कपास के थोक व्यापार के कारण इसकी ख़ुशहाली १८वीं सदी तक कायम रही। श्री गुरु नानक साहिब के समय और बाद के ज़्यादातर प्रारंभिक सिक्ख क्षत्रिय थे। पंजाब में उनके संबंधी थे और अक्सर अपने पूर्वजों के पैतृक क्षेत्र पंजाब में आते-जाते और गुरु साहिबान के दरबार में श्रद्धा सहित नत्मस्तक होते थे। यह भाईचारा आपस में बहुत ही अच्छी तरह जुड़ा हुआ था। तख़्त श्री पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी के संवैधानिक गठन से पहले तख़्त साहिब के सभी ग्रंथी, जिन्हें महंत कहा जाता था, क्षत्रिय ही थे। ढाका के बहुत-से महंत क्षत्रिय १९४७ ई. में भारत-विभाजन के समय और बाकी बंग्लादेश की मुक्ति जंग के दौरान इस स्थान को छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। इनमें से ज्यादातर क्षत्रिय सिक्ख अब कहीं नहीं दिखाई देते। क्षत्रिय जाति की पृष्ठभूमि वाले इन सिक्खों की आबादी बलिआ, बस्ती, वाराणसी, आज़मगढ़, निज़ामाबाद, भबूआ, मधूड़ी (ज़िला मधुबनी), पटना, महेशवा, सादलपुर, कटिहार, मुरारायी, कौंटायी तथा कुछ अन्य स्थानों पर देखी जा सकती है। इनमें से ज्यादातर स्थानों को श्री गुरु नानक साहिब, श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब और श्री

गुरु गोबिंद सिंघ जी में से किसी एक, दो या तीन गुरु साहिबान के चरणों का स्पर्श प्राप्त है। देश-विभाजन से पहले ढाका में इनकी मौजूदगी देखी जा सकती थी, जहां श्री गुरु नानक साहिब की यात्रा से संबंधित और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी के यहां लंबा समय ठहरने से संबंधित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान हैं।

बहुत-से स्थानों पर सिक्खों की संख्या घट गई है और कुछ स्थानों पर बिलकुल नहीं है। इन इलाकों में पुराने गुरुद्वारा साहिबान देखे जा सकते हैं। गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल, मरम्मत और संगती कार्य निर्विघ्न चलते रखने के लिए गाँवों या कसबों के कटरों (मंडी या बाज़ार) की बहुत-सी कृषि योग्य भूमि इनके नाम कराई हुई थी, जिसकी आमदन गुरुद्वारा साहिबान को मिलती थी। बड़े स्तर पर गुरुपर्व मनाए जाते थे। ये सिक्ख अलग-अलग इलाकों के हिसाब से खड़ी बोली, मैथली, मघी और भोजपुरी से लेकर आसामी तथा बंगाली भाषा बोलते थे।

सिक्ख डायसपोरा (प्रवासी) के एक अन्य महत्वपूर्ण अंग अगरहरी सिक्ख हैं। ये साधारणतया वाराणसी के आस-पास के इलाकों में मिलते हैं। ये वास्तव में व्यापारी या बनिया श्रेणी से संबंधित हैं। सासाराम के सिक्ख मुख्य रूप से अगरहरी हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सासाराम भ्रमण के समय क्षत्रिय सिक्खों के साथ-साथ यहां अगरहरी सिक्ख भी मौजूद थे। गुरु जी बहुत ही आदरणीय सिक्ख प्रचारक चाचा फग्गू मल्ल के घर कुछ दिन ठहरे थे। यहां की बहुत सारी जनसंख्या मुख्य रूप से सिक्ख धर्म के आध्यात्मिक पक्ष की तरफ आकर्षित हुई। सुनार, तेली, लुहार, केसरी, कुशवाहा, केसरवानी, ब्राह्मण तथा अन्य जातियों एवं वर्गों से संबंधित विभिन्न लोग अभी तक अपने दिल में सिक्ख धर्म के प्रति प्यार और श्रद्धा का भाव रखते हैं। सासाराम के बारे में हम कह सकते हैं— ''ससाराम जीता है गुरु के नाम पर।'' अमीर विरासत वाले कई ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान यहां देखे जा सकते हैं। गुरुद्वारा चाचा फग्गू मल्ल जैसे ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के अलावा गुरुद्वारा टकसाल संगत, गुरुद्वारा गुरु का बाग सहित कई महत्वपूर्ण गुरुद्वारे यहां मौजूद हैं। इनकी सेवा-संभाल संगत या निजी स्तर पर की जाती है। यहां गुरु साहिबान के नाम पर स्कूल तथा अन्य शैक्षणिक संस्थायें हैं। यहां के सिक्ख प्रत्येक गुरुपर्व और सिक्ख इतिहास के अन्य महत्वपूर्ण दिवस बड़े आदर एवं जोश के साथ मनाते हैं। मुझे कई स्थानों पर चलते गुरुपर्व समागम, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की छठी (पुत्र के जन्म के छठे दिन को मनाने का रिवाज़), श्री गुरु नानक साहिब का ज्योति-जोत पर्व (स्थानीय भाषा में श्राद्ध कहा जाता है) और अगरहरी सिक्खों द्वारा मनाए जाते कई समारोह देखने का मौका मिला। ऐसे सिक्ख जनसंख्या वाले दो अन्य इलाकों में भी देखा जा सकता है, जिनकी चर्चा आगे की जा रही है—

इस इलाके के अगरहरी सिक्ख दो सदियों में यहां से उठ कर दो अन्य प्रमुख क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में फैल गए थे। एक था कोलकाता, जहां इन सिक्खों की बड़ी संख्या शहर के केंद्र में बहुत लंबे समय से आबाद हुई देखी जा सकती है। इनके द्वारा बनाई गुरुद्वारा साहिबान की इमारतें कोलकाता शहर तथा इसके निकटवर्ती इलाके की सबसे पुरानी इमारतों में से ख़ास हैं। गुरु नानक विद्यालय नामक एक बहुत पुराना स्कूल भी है। अगरहरी सिक्ख आम तौर पर व्यापारिक धंधों में लगे हुए थे और इनमें से कुछ तो बहुत बड़े कारोबारी थे। उनके पास बड़े घर,

बाग़ और यहां तक कि अपने निजी गुरुद्वारा साहिबान भी थे। इस समय कोलकाता की छोटी सिक्ख संगत की प्रबंधक कमेटी दो गुरुद्वारा साहिबान की देख-रेख कर रही है। ये मुख्य रूप से कोलकाता के बड़ा बाज़ार, नारकेलडांगा, बागूआटी और शहर के आस-पास के अन्य इलाकों में रहते हैं। शुरूआती दौर के सिक्ख निवासी होने के नाते उन्होंने स्थानीय लोगों के अंदर सिक्ख धर्म का संदेश फैलाने की कोशिश की। २०वीं सदी के शुरू में पंजाबी सिक्खों के बहुतात में आने के कारण ये एक तरह से सिमट गए। लंबे अरसे के मेल-मिलाप से इनकी अन्य सिक्खों के साथ निकटता विकसित हो सकी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा स्थापित सिक्ख मिशन कोलकाता (पूरबी भारत) ने अपने अथक प्रयत्नों से इस सामाजिक-सांस्कृतिक अंतर को दूर करने का प्रयास किया। बच्चों को गुरबाणी, गुरमुखी, सिक्ख इतिहास, कीर्तन सिखाने तथा उनके जीवन को और अच्छा बनाने की जानकारी देने के लिए साप्ताहिक गुरमति क्लासों का सिलसिला शुरू किया गया। धीरे-धीरे इनके बच्चे और संगत कोलकाता के आम सिक्ख जगत के साथ घुल-मिल गई। अब आपसी समझ के द्वारा नज़दीकी संबंध स्थापित हो चुके हैं। ये कोलकाता के स्थानीय और इसके आस-पास के गुरुद्वारा साहिबान में होने वाली सिक्ख सरगर्मियों में बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लेने की कोशिश करते हैं।

अगरहरी सिक्खों की आबादी वाले और दो गाँव केदली चट्टी तथा डुमरी झारखंड के चतुरा ज़िले में हैं। पहले यह हजारीबाग ज़िले का हिस्सा था। करीब दो सौ साल पहले व्यापार के मकसद से सिक्ख सासाराम (बिहार) और उत्तर प्रदेश की पूरबी दिशा से यहां आए थे। कई यहां पर बस गए। केदली तब बड़ी देहाती मंडी था। यहां से हजारीबाग और गया के माध्यम से कोलकाता तक व्यापार किया जाता था। यहां के सिक्ख अमीर ज़मींदार, दुकानदार और थोक व्यापारी बन कर उभरे। स्थानीय व्यापार और कारोबार भी इनके नियंत्रण में था। इस समय सिक्ख केदली चट्टी, डुमरी और हंटरगंज के गाँवों में बसते हैं। आज भी इनका दबदबा देखा जा सकता है। सबसे अधिक व्यापार इनके हाथों में है। ज़्यादातर दुकानें इन्हीं की हैं। दो गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध स्थानीय कमेटियों द्वारा चलाया जाता है। इन गाँवों में सिक्ख धर्म का काफ़ी बोलबाला है। इन गाँवों के बहुत-से सिक्ख सौ साल से भी ज्यादा समय से कोलकाता में बसे हुए हैं। अगरहरी सिक्ख पंजाबी उप-भाषाओं के साथ-साथ आपस में भोजपुरी, माघी, कलकत्तिया हिंदी और बंगाली बोलते हैं।

सिक्खों का एक और मुख्य ग्रुप बिहार के ज़िला कटिहार में बरारी पुलिस थाने के अधीन आते गाँवों में बसता है। गंगा नदी पर कड़ागोला के आस-पास गाँव लक्ष्मीपुर, उछला, गुरु बाज़ार, भंडारतल, हुसैना, भैंसदरा आदि में काफ़ी सिक्ख आबादी है। कंतनगर और भवानीपुर के दरिया के साथ लगती पिछली आबादी दरिया की बाढ़ ने पूरी तरह से तबाह कर दी थी। कहा जाता है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब ढाका जाते समय यहां से होकर गए थे। कड़ागोला घाट पूरबी भारत की महत्वपूर्ण दरिया बंदरगाह थी। ये सिक्ख अपने आपको 'सोधवंशी खालसा' कहलवाते थे। माल महकमे का स्थानीय रिकार्ड भी इस बात की पुष्टि करता है। यह प्रतीत होता है कि पंजाब और स्थानीय सिक्खों के विभिन्न दलों ने आपस में मिलजुल कर यहां एकजुट ख़ालसे की पहचान कायम की। पहले ये बड़े

जमींदार थे। अब भी इनके पास ज़मीन की भारी मलकियत है। ये मुख्य रूप से कृषि-कार्य करते थे। बाद में ये अन्य काम-धंधों के कारण भारत में सब तरफ फैल गए। ये लोग ढाबा चलाते हैं और अलग-अलग गुरुद्वारा साहिबान ख़ास कर पूरबी भारत के गुरुद्वारा साहिबान में ग्रंथी, कीरतनीए तथा सेवादार के रूप में काम करते हैं। ये लोग सरकारी और दूसरी पेशेवर नौकरियां भी कर रहे हैं। चाहे इनकी आबादी पांच हज़ार के लगभग ही है, फिर भी इनका स्थानीय समाज में अच्छा रसूख और प्रभाव है। ये पंजाब में २०वीं सदी के आरंभ में चली सिंघ सभा लहर की विरासत के धारक हैं। ये तख़्त श्री पटना साहिब से लेकर श्री अकाल तख़्त साहिब श्री अमृतसर और समूचे सिक्ख भाईचारे के साथ अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। ये राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के यथार्थ को बहुत अच्छी तरह समझते हैं। ये लोग इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थानीय और ज़िला स्तरीय पदों पर विराजमान हैं। ये नौवें पातशाह के शहीदी दिन पर एक बड़ा गुरमति दीवान आयोजित करते हैं। स्थानीय सिक्खों के साथ-साथ बाहर से आकर यहां कार्यरत सिक्ख भी इस गुरुपर्व में हिस्सा लेते और गुरु जी के शहीदी दिवस को बहुत प्यार एवं श्रद्धा सहित मनाते हैं। भारत और संसार के अन्य हिस्सों से प्रचारक एवं सिक्ख इस शहीदी दिवस समागम में हिस्सा लेने के लिए यहां पहुंचते हैं। समय-समय पर अन्य गुरुपर्व भी अलग-अलग गुरुद्वारा साहिबान द्वारा मनाए जाते हैं। आपस में मीठी मैथिली भाषा की उप-भाषा अंगिका में बातचीत करते हैं। इनमें से कुछ ख़ास अवसरों पर पंजाबी भी बोल लेते हैं। यहां की कलवार जाति बहुत ही प्रभावशाली है, जिन पर उदासी और निरमला संप्रदाय के पुराने सिक्ख प्रचारकों का बहुत प्रभाव था। वे बड़ी संख्या में नानक शाह-पंथी थे।

वैशाली ज़िले में एक गुमनाम-से गाँव शिवनगर में पचास से ज्यादा सिक्ख परिवार रहते हैं। ये अपनी पहचान हिंदुओं की कुर्मी जाति के साथ जोड़ते हैं और विवाह सहित बाकी सामाजिक संबंध भी उनके साथ रखते हैं। ये स. सुक्खा सिंघ और स. मोहर सिंघ को अपना पूर्वज होने का दावा करते हैं। दूसरे कुर्मियों की भांति ये लोग भी मुख्य रूप से खेती करते हैं। कई लोग अच्छे पढ़े-लिखे हैं। कुछ लोग देश के अलग-अलग हिस्सों में इंजीनियर, डॉक्टर, अध्यापक, अकाउंटेंट आदि के रूप में अच्छे रुतबे वाले व्यवसाय से संबंधित हैं। कुछ पूरबी भारत के अलग-अलग गुरुद्वारा साहिबान के सेवा-प्रबंध में शामिल हैं। इनका बाकी स्थानीय भाईचारों में बहुत आदर-मान है। ये लोग स्थानीय राजसी और सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। आपस में ये लोग मैथिली और भोजपुरी मिश्रित भाषा वज्जिका में बात करते हैं। ये लोग बहुत-से गुरुपर्व मनाते हैं, ख़ास तौर पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश दिवस बड़े स्तर पर मनाते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५०वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर पटना साहिब में बहुत शानदार समागमों का आयोजन कर दुनिया भर के सिक्खों का दिल जीतने वाले गुरु-घर के परम श्रद्धालु बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार इसी कुर्मी भाईचारे से संबंधित हैं।

पटना साहिब और इसके साथ लगते नालंदा, नवादा, जहानाबाद तथा बाढ़ जिलों में अलग-अलग जातियों जैसे— कहार, मच्छवरा, केवट, कुशवाहा, सुड़ी, कुर्मी, पासवान, यादव, तेली, गदेरी, कुम्हार, रविदासिये सहित और बहुत-से लोगों ने सिक्ख धर्म को धारण किया था। इनमें से ज़्यादातर पटना साहिब और इसके साथ लगते अन्य गुरुद्वारा साहिबान में

ग्रंथी, सेवादार आदि लगे हुए हैं। ये लोग आपस में मुख्यत: मघी भाषा बोलते हैं। हमें इनमें से ऐसे सिक्ख भी मिल जाते हैं, जिनके कई सदियों से जम्मू, कश्मीर और पंजाब के साथ गहरे संबंध हैं। विभिन्न इलाकों में ये लोग कई गुरुपर्व धूमधाम से मनाते हैं और पूरी तरह से सिक्ख धर्म की पालना करते हैं। दानापुर के नज़दीक ऐनखां के राजा राघवेंद्र धारी सिंह के समय पटना साहिब और इसके निकटवर्ती क्षेत्र जहानाबाद, अरवल तथा औरंगाबाद आदि जिलों में बसते हैं। अंग्रेज़ों के समय सरकारी रिकार्ड में मिलेट्री ब्राह्मणों के रूप में जाने जाते बिहार के सबसे मज़बूत जमींदार 'भूमि' भाईचारे ने भी भारी संख्या में सिक्ख धर्म अपनाया। पूर्व विधायक और कुछ गाँवों के मुखिया भी ख़ालसा बने। यह कहा जाता है कि इनमें से कुछ रणवीर सेना नामक प्राईवेट फ़ौज के साथ भी जुड़े रहे हैं।

गया, नवादा और बिहार शरीफ़ इलाकों में अलग-अलग तरह की पृष्ठभूमि वाले सिक्ख देखे जा सकते हैं। आरंभ में नानक पंथ का तेज़ विस्तार अग्रणी जाति के लोगों के इसमें शामिल होने के साथ हुआ। ये भी मथुरा से उठे अगरहरियों की तरह बनिया भाईचारे से संबंधित हैं। इनमें भी आम सिक्खों की तरह तंबाकू के प्रयोग का सख़्त परहेज़ है। ये लोग बड़े व्यापारियों और अमीर कारोबारियों के रूप में उभरे। इन्होंने महंतों से श्री गुरु नानक साहिब की शिक्षाएं ग्रहण की। इन्होंने नानकशाही डेरों के निर्माण और इनकी देखभाल के लिए दिल खोल कर बहुत-सी जमीन और धन दान किया। महुरी, बरनवाल, कोइरी, शाओ, केसरी तथा दूसरी कई जातियों के लोग विभिन्न स्थानीय उदासी संगत के साथ जुड़े हुए थे।

भविष्य में सिक्खी के विकास की संभावनाओं से ओत-प्रोत और नया उभर रहा एक बड़ा वर्ग उत्तरी बिहार के अररिया, पूर्णिया और किशनगंज जिलों में है। पहले ये लोग मुख्य रूप से सन् १९७० से १९८० ई. के दरमियान हरे इंकलाब के दौरान पंजाब में प्रवासी मज़दूरों के रूप में आए थे। नौकरियों की चाहत में पंजाब आकर रहने से इन पर सिक्ख धर्म का गहरा प्रभाव पड़ने लगा। 'किरत करो, नाम जपो, वंड (बांट कर) छको' के बुनियादी संकल्प के साथ-साथ मानवता में समानता और मानव जाति के प्रति नि:स्वार्थ सेवा के संदेश ने इनकी पतनोन्मुख वाली मानसिक स्थिति से उभरने में सहायता की। ये लोग हिंदुओं की सबसे निम्न जातियों से संबंधित होने के कारण हीनता भरी ज़िंदगी जीने वाले बहुत गरीब लोग थे। ये मुख्य रूप से मुसाहिर पासवान, यादव, लुहार और ऐसी अन्य जातियों से संबंधित थे। सिक्ख धर्म के प्रभाव से इनके दिल में आत्माभिमान के साथ जीने का उत्साह पैदा हुआ और ये अमृतधारी सिक्ख बन गए। अब ये लोग बिहार में निहंग पहनावे में दिखाई देने वाले सिक्ख हैं, जो हमेशा चढ़दी कला में रह कर विचरण करते दिखाई देते हैं। ये लोग परवानपुर, महाराजपुर, गरगम्मा, गाड बालसेरा और कई अन्य गाँवों में फैले हुए हैं। इन गाँवों में बसते और लोग भी सिक्ख धर्म के बहुत नज़दीक हैं। बहुत-से लोग सिक्ख जीवन-जाच धारण करने के लिए तत्पर हैं। पंजाब के सिक्ख किसानों के अधीन या हिस्सेदार रहे होने के कारण इनकी सिक्ख धर्म के साथ निकटता प्राकृतिक रूप से बन गई। पंजाबी सिक्खों के चढ़दी कला वाले स्वभाव और जीवन-शैली का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये पाँच बाणियों के नित्तनेमी हैं और रोज़ाना कीर्तन श्रवण करते हैं। नियमित रूप से गुरुपर्व मनाते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश दिवस बहुत

श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जाता है। ये लोग अपनी स्थानीय मैथिली भाषा के साथ-साथ बोलचाल वाली पंजाबी भाषा इस्तेमाल करते हैं। सिक्ख मिशन कोलकाता के सेवादार यहां कुछ सिक्खों को खासकर 'सांझीवाल ट्रस्ट' वालों को प्रेरित करने में सफल हो सके, जिन्होंने हलहलिया में गुरमुखी विद्यालय और परवानपुर में एक छोटा-सा गुरुद्वारा साहिब बनाने का काम शुरू किया। इस ट्रस्ट ने कुछ अन्य इलाकों में भी गुरुद्वारा साहिबान बनाने की हमारी विनती स्वीकार की है। सिक्खी-प्रचार की इच्छा से लबालब और आर्थिक रूप से सम्पन्न सिक्खों को इस क्षेत्र में सिक्खी की जड़ें मज़बूत करने के लिए आगे आना चाहिए।

इसके अलावा बिहार में सैकड़ों उदासी डेरे और कुछ निरमले डेरे भी हैं, जो कभी सिक्ख धर्म के महत्वपूर्ण केंद्र होते थे। ऐसे कई स्थानों पर गुरुपर्वों या अन्य विशेष अवसरों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अखंड पाठ साहिब होते हैं। कई स्थानीय लोग पीढ़ियों से इन डेरों के साथ जुड़े हुए हैं। यह चिंता की बात है कि बहुत-से डेरों की संपत्ति दूसरे लोगों द्वारा नाजायज तौर पर दबायी जा रही है और निकट के भविष्य में इनके लुप्त हो जाने का अंदेशा भी है। बड़ी संख्या में ये डेरे सारे पूरबी भारत में अनगिनत स्थानों और दूर-दराज के इलाकों में फैले हुए हैं। इन सभी डेरों की सूची और इनसे संबंधित सारी संपत्ति का पूरा और सही रिकार्ड तैयार किया जाना चाहिए। यह सिक्ख इतिहास और सिक्ख धर्म को प्यार करने वाले सभी के लिए गंभीरता के साथ विचार करने का विषय है।

कई सालों से मैं पूरबी भारत में बिखरे सिक्ख भाईचारे की खोज में लगा हुआ हूं। मुझे ऐसे स्थानों पर जाकर बहुत सुकून भरपूर ख़ुशी मिलती है। यह मेरे लिए बहुत महत्व भरा काम है। बिहार के अलग सामाजिक वातावरण में तीन सौ साल से ज्यादा समय से रह रहे इन सिक्खों ने सिक्ख सभ्याचार, रीतियों और सरगर्मियों को आलोप नहीं होने दिया। मेरे लिए इन स्थानों की यात्रा आँखें खोलने वाली होती है। हमने देखा है कि ये लोग समकालीन परिस्थितियों, मुद्दों और मसलों का कैसे सामना करते हैं और आधुनिक दौर के विभिन्नता भरे समाज में अपने आप को कैसे ढालते हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि ये लोग सिक्खी के विश्व-नक्शे पर उभरते रूप में दिखाई देने की बजाय अंधेरे में ग़ुम क्यों हैं? सिक्ख भाईचारे में रिश्तों का बुनियादी ताना-बाना प्यार, प्रतिबद्धता और पारदर्शिता वाला होना चाहिए। इसके लिए तालमेल और मेल-जोल सबसे ज़रूरी हैं। मैंने बिहार के विलक्षण सभ्याचार के साथ अति निकटता वाला संबंध बनाया है। सिक्ख भाईचारे की समस्याओं और तकलीफ़ों से यहां के निवासी भी प्रभावित होते हैं। सिक्ख नेताओं, विद्वानों और विचारवानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि पंजाब या दिल्ली जैसे स्थानों पर होने वाली राजनीतिक और सामाजिक गड़बड़ियां यहां के सिक्खों की जीवन-शैली पर किस तरह असरअंदाज़ होती हैं। अक्सर जब हम सिक्खी की बात करते हैं तो हमारा मतलब पंजाब से ही होता है, जो उचित नहीं है। यह समझने और ध्यान देने वाली बात है कि उत्तर, पूरब, पश्चिम और दक्षिण तक सिक्खी के रखरखाव को बराबर ध्यान में रखना चाहिए। बेगानापन और भेदभाव की भावना बहुत-से स्थानों पर अलग-अलग वर्ग के सिक्खों द्वारा महसूस की जा रही है। कइयों का तो अस्तित्व ही ख़त्म होने के किनारे है। उनकी अपनी अलग समस्याएं हैं, जैसे उनकी अपनी अलग मान्यताएं हैं और सबसे महत्वपूर्ण कि उनकी

अपनी-अपनी भाषाएं हैं। इसका तात्पर्य है कि उनकी विश्व-दृष्टि अलग है। बेशक हमारी आस्था, इतिहास, विचारधारा, केंद्रीय स्थानों सहित आपस में अनेक संबंध हैं, मगर निवास-स्थान, इन स्थानों का सभ्याचार, भाषाएं और राजनीतिक परिस्थितियां तो एक-दूसरे से अलग हैं। हमें पंजाब के साथ बाकी देश के सिक्खों की भाषाई एवं सांस्कृतिक विभिन्नता को जोड़ने वाला पुल बनाना चाहिए। हर तरह की रुकावट और अंतर मिटा कर संसार के हर हिस्से में रह रहे सिक्खों को आपस में जोड़ा जाना चाहिए। यह कुछ संतोषजनक बात है कि ऐसे विचार वाले कुछ बहनों-भाइयों की तरफ से दूरदृष्टि भरे अथक यत्नों से दुर्गम क्षेत्रों के लिए लंबे समय की योजनाएं बनाई गई हैं, जो सिक्ख नज़रिए से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

समूचे सिक्ख भाईचारे को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि जिन स्थानों को श्री गुरु नानक साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का चरण-स्पर्श प्राप्त है, हमें उनकी जानकारी भी होनी चाहिए और उन स्थानों को जाकर देखना भी चाहिए। बिहार, झारखंड, उड़ीसा, आसाम, पश्चिमी बंगाल यहां तक कि बंग्लादेश के ऐतिहासिक महत्ता वाले समूह गुरुद्वारा साहिबान के साथ भी हमारा तालमेल होना चाहिए। यह कार्य पटना साहिब से शुरू होना चाहिए और इसमें बिहार के राजगीर, राजौली, सासाराम, गया, लक्ष्मीपुर, महेशवा (कटिहार), हलहलिया और अररिया ज़िले के गाँव, पूरबी उत्तर प्रदेश के वाराणसी, निज़ामाबाद, बलिया सहित कई स्थान, आसाम के धोबड़ी साहिब और नाओगाओं के गाँव, बंग्लादेश के ढाका, चिटागौंग तथा माई मेन सिंघ, पश्चिमी बंगाल के मालदा, कलकत्ता तथा चंद्राकोना, उड़ीसा के कटक व पुरी के अलावा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अन्य गुरुद्वारा साहिबान, उदासी और निरमला संप्रदाय के डेरों, मठों आदि को भी शामिल करना चाहिए। पूरबी भारत के सिक्खों की सलाह से इन स्थानों की यात्रा का नेटवर्क बनाया जाना चाहिए। हमें इन स्थानों की सार लेने के लिए आगे आना चाहिए, ताकि इनके प्रति समूचे पंथ के अंदर व्यापक, विशाल और अपनत्व भरा नज़रिया पैदा हो सके, जो हमारे जीवन-काल में धरती के किसी कोने में बैठे रहने से हासिल नहीं हो सकता। 'बीते को जानो, भविष्य को पहचानो' हमारा नारा होना चाहिए। अपनी महान विरासत के वारिस होने का फख्र होने के साथ-साथ हमारे मन में इस दाते के प्रति विनम्रता भरपूर शुक्राने का भाव होना चाहिए।

विषय से संबंधित सामग्री:

पाठक संबंधित तथ्यों और इनकी प्रासंगिकता के बारे में और जानकारी लेने के लिए निम्नलिखित आलेख को पढ़ सकते हैं :—

१. Sikh Living Other Than Punjab — अक्तूबर २००९ में इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्ख स्ट्डीज़ द्वारा आयोजित सेमिनार में पेश किया गया और आंशिक रूप से The Sikhs– Beyond Punjab शीर्षकाधीन 'सिक्ख रिविऊ' में प्रकाशित हुआ।

२. Sikhs of Sasaram— ३०- ३१ नवंबर, २०१० ई. को गाजियाबाद में 'भूले-विसरे सिक्खों के तीसरे सम्मेलन' में पढ़ा गया पर्चा, जो 'सिक्ख रिविऊ' में Roots of Faith– Sikhs of Sasaram के शीर्षक तले छपा। इसका पंजाबी रूप 'सासाराम दे निवासी सिक्ख', 'गुरमति प्रकाश' के जनवरी, २०११ अंक में तथा बाद में कई दूसरी पंजाबी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ।

३. 'घरों दूर घर'— पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला द्वारा कोलकाता में आयोजित पूरबी भारत पंजाबी सम्मेलन' के सेमिनार में पेश किया गया पर्चा। पंजाबी रूप 'गुरमति प्रकाश' में और अंग्रेज़ी रूप 'Abstract of Sikh Studies में अप्रैल, २०१२ में छपा। मुंबई सिंघ सभा

की आनलाइन पत्रिका में ५ मई, २०११ ई. को Home Away From Home शीर्षक तले प्रकाशित हुआ।

४. 'हलहलिया दे सिक्ख'— पंजाबी में 'गुरमति प्रकाश' और 'सिक्ख फुलवाड़ी' तथा Blessed Sikhs of Bihar अंग्रेज़ी में 'सिक्ख रिविऊ' मई २०१३ ई. में प्रकाशित हुआ।

५. 'सोध वंशी खालसा— हमारी अनजानी विरासत' यह पर्चा 'गुरमति प्रकाश' के नवंबर २०१४, दिसंबर २०१४ और जनवरी २०१५ अंकों में छपा। इसका अंग्रेज़ी रूप गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी की 'खोज पत्रिका' और 'सिक्ख रिविऊ' के जुलाई व अगस्त २०१५ के अंकों में प्रकाशित हुआ।

६. 'वैशाली दे सिक्ख'— 'गुरमति प्रकाश' के नवंबर और दिसंबर, २०१५ के अंकों में प्रकाशित हुआ। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी की 'खोज पत्रिका' में भी छपा।

७. Kedli Chatti and Dumri (Jharkhand)- Two More Pearls in the String of Sikhism, Abstracts of Sikh Studies, (Vol. XVIII, Issue 2) के अप्रैल-जून २०१६ अंक में प्रकाशित हुआ।

८. 'गुरु बोली पंजाबी'— यह पर्चा पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा आयोजित पंजाबी कान्फ्रेंस- २०१६ में पेश किया गया।

कविता

रंघरेटे, गुरु के बेटे —भाई जीवन सिंघ

*-श्री रमेश बग्गा चोहला**

करके हौंसला बड़ा तुमने, कर्म कमाया सिक्खी का।
रंघरेटे, गुरु के बेटे तुमने, मान बढ़ाया सिक्खी का।
हिम्मत करके नवम् पिता का, शीश उठा लिया तुमने।
साथ अदब के अपनी छाती, संग लगा लिया तुमने।
जान हथेली पर रख कर तुमने, फर्ज निभाया सिक्खी का।
रंघरेटे, गुरु के बेटे तुमने, मान बढ़ाया सिक्खी का।
औरंगजेब का सपना तुमने, कर चकनाचूर दिया।
भ्रम पाला था जो उसने, कर तुमने उसको दूर दिया।
सहकर दुख-तकलीफें तुमने, भला चाहा सिक्खी का।
रंघरेटे, गुरु के बेटे तुमने, मान बढ़ाया सिक्खी का।
तुम्हारा यह उपकार कभी, नहीं भुलाया जाएगा।
सिक्ख इतिहास के पन्नों पर, सदा दिखाया जाएगा।
'चोहला' कहता सच्चे तुम, हो सरमाया सिक्खी का।
रंघरेटे, गुरु के बेटे तुमने, मान बढ़ाया सिक्खी का।

**१३४८/१७/१, गली नं. ८ ऋषि नगर एक्सटेंशन, लुधियाना-१४१००१; फोन : ९४६३१३२७१९*

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १३४

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले
गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥
नाभि पवनु घरि आसणि बैसै
गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥
सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै
त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥
खावै दूख भूख साचे की साचे ही त्रिपतासि रहै ॥
अनहद बाणी गुरमुखि जाणी
बिरलो को अरथावै ॥
नानकु आखै सचु सुभाखै
सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥६५ ॥ (पन्ना ९४५)

६५वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक पातशाह सिधों द्वारा पूछे ६४वीं पउड़ी के प्रश्नों का जवाब और विस्तार से देते हुए समझाते हैं कि जब ईश्वर की रहमत से जीव गुरु के हुक्म में चलता है तब इस मन में स्थिरता आती है। यह अडोल हो जाता है। प्राणों को स्थिर रखने वाली नाभि है और इस भयावह सागर से पार उतारने वाला शबद ईश्वर में समा जाता है अर्थात् अभेद हो जाता है। शबद की बरकत ही पैदा होती है। जीव को आत्मिक ज्ञान हो जाता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है अर्थात् जर्रे-जर्रे में एक समान समाया हुआ है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरु-आदेशानुसार चलते हुए मनुष्य जब ईश्वर से मेलजोल बढ़ाता है अर्थात् जब मनुष्य गुरु के हुक्मानुसार चल कर जगत के मूल प्रभु को पहचानता है, फलस्वरूप प्रभु से उसकी गहरी निकटता बन जाती है, मन की चंचलता समाप्त हो जाती है तथा मन अडोल होकर हृदय-घर में टिक जाता है। उसमें एक प्रकार से ठहराव आ जाता है, भटकना पूर्णतया समाप्त हो जाती है।

प्राणों का आरंभ नाभि से होता है, अत: प्राण अर्थात् श्वास नाभि रूपी घर में आसन पर बैठते हैं। गुरु द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है, जिसके परिणामस्वरूप जीव वास्तविकता को पा लेता है। गुरु-शबद भयावह संसार रूपी सागर से पार उतारता है। प्रभु हृदय-घर में बस जाए तो तीनों लोकों में बसने वाली प्रभु की ज्योति शबद के माध्यम से हृदय-घर में प्रज्वलित हो जाती है। जैसे-जैसे त्रिलोक में व्यापक प्रभु की ज्योति को मनुष्य की जिज्ञासु वृत्ति खोजती है वैसे-वैसे प्रभु को मिलने की आकांक्षा बढ़ती है। जैसे-जैसे यह आकांक्षा बढ़ती है वैसे-वैसे दुखों की निवृत्ति होती जाती है। मन तृप्त हो जाता है।

एकरस व्यापक ईश्वरीय ज्योति को किसी विरले जन ने ही पहचाना है। गुरु पातशाह

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

फरमान करते हैं कि जिसने यह राज जाना है वही सच्चे मालिक का सिमरन करता है और प्रभु के सच्चे रंग में रंग जाता है। उसका यह गूढ़ा रंग कभी उतरता नहीं।

मन स्थिर हृदय में निवास करता है। गुरमुख बन कर ही निज स्वरूप को पहचाना जा सकता है। शबद रूपी प्रभु सदैव कायम रहने वाला है। उसके हृदय-घर में बस जाने के फलस्वरूप त्रिलोकी प्रभु की ज्योति शबद के माध्यम से मिल जाती है। सत्य स्वरूप प्रभु की जिज्ञासा ही समस्त दुखों का समूल विनाश कर देती है और मन तृप्त हो जाता है। कोई विरला गुरमुख ही अनहद बाणी के अन्तरीवी भावों को समझता है। सच्चे प्रभु के सच्चे रंग में रंगा मन सदा के लिए रंग जाता है और यह गहरा रंग कभी नहीं उतरता। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया है कि प्रभु-प्यार का रंग किसी भाग्यशाली पर ही चढ़ता है जो न कभी मैला होता है और न ही उतरता है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥
मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥१ ॥
प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥
सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥१ ॥रहाउ ॥
जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥
पी अंम्रितु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥
(पन्ना ८०८)

सुखदायक प्रभु के मिलाप के उपरान्त आनंद ही आनंद है। गुरु-शबद ने जीव को अमर कर दिया हैं। अमृत-पान कर जीव सदैव तृप्त रहता है।

जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥
नाभि कमल असथंभु न होतो
ता पवनु कवन घरि सहता ॥
रूपु न होतो रेख न काई
ता सबदि कहा लिव लाई ॥
रकतु बिंदु की मड़ी न होती
मिति कीमति नही पाई ॥
वरनु भेखु असरूपु न जापी
किउ करि जापसि साचा ॥
नानक नामि रते बैरागी
इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥ (पन्ना ९४५)

६६वीं पउड़ी में प्रश्न और उत्तर दोनों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। सिधों द्वारा गहन प्रश्न किया गया कि जब यह हृदय और शरीर नहीं था, तब मन का निवास कहां था? जब नाभि और चक्र ही नहीं थे, तब श्वास कहां टिकते थे? जब कोई आकार, रूप-रेखा ही नहीं थी, तब शबद का ठिकाना कहां था? जब शरीर ही नहीं था, तब मन प्रभु में कैसे लीन हो सकता था? इन सब रहस्यमयी प्रश्नों के उत्तर श्री गुरु नानक पातशाह बड़ी सहजता से देते हैं कि जब हृदय और शरीर नहीं थे, तब वैरागी मन निरगुण-निराकार परमेश्वर में ही लीन रहता था।

सिधों का प्रश्न था कि यदि हृदय और शरीर न

होता तो यह मन कहां रहता अर्थात् बिना किसी निवास स्थान के इसका ठिकाना कहां होता? हृदय और शरीर के बिना चैतन्य सत्ता का निवास कहां था? जब नाभि कमल अर्थात् मूलाधार का स्तम्भ नहीं था तो प्राण (पवन रूपी श्वास) किस स्थान पर आश्रय लेते थे? जब कोई रूप और आकार नहीं था तो शबद की लिव कहां लगी हुई थी? जब मां के रक्त और पिता के बिंद से निर्मित यह शरीर ही नहीं था तो शबद रूपी प्रभु की सीमा और कीमत कैसे जानी जा सकती थी? जब कोई वर्ण, वेश और स्वरूप ही नहीं था तो प्रभु का जाप-सिमरन कैसे किया जा सकता था?

इन रहस्सयी गहन प्रश्नों का उत्तर देते हुए बड़ी सहजता से श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि पारब्रह्म प्रभु के नाम में लीन होने अर्थात् प्रभु के गुणों से सच्चा प्यार करने वाले के लिए प्रभु हर वक्त, हर स्थान पर मौजूद है अर्थात् हर पल कण-कण में सत्य स्वरूप में वह दिखाई देता है। प्रभु के गुणों से प्रेम करने वालों के लिए प्रभु सर्वव्यापी है। प्रभु-नाम में लीन हुए वैराग्यवान को जर्रे-जर्रे में हर समय प्रभु साक्षात् प्रतीत होता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी परमेश्वर की सर्वव्यापकता का उल्लेख बहुतायत से किया गया है :

जत कत पेखउ एकै ओही ॥
घट घट अंतरि आपे सोई ॥ *(पन्ना ३८७)*

इस सन्दर्भ में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं :

जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥
(पन्ना ६७७)

अर्थात् जहां-जहां भी मैं देखता हूं प्रभु प्रत्यक्ष दिखाई देता है। किसी जगह पर भी प्रभु मुझसे दूर नहीं। वह सर्वत्र रमण कर रहा है, इसलिए हे मेरे मन! सदैव उसका सिमरन कर।

हिरदा देह न होती अउधू
तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥
नाभि कमलु असथंभु न होतो
ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥
रूपु न रेखिआ जाति न होती
तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥
गउनु गगनु जब तबहि न होतउ
त्रिभवण जोति आपे निरंकारु ॥
वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥
साच बिना सूचा को नाही
नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥ *(पन्ना ९४५)*

६७वीं पउड़ी में भी श्री गुरु नानक देव जी ने ६६वीं पउड़ी में किए गए प्रश्नों का विस्तारपूर्वक उत्तर दिया है कि जब हृदय और शरीर नहीं था तब वैरागी मन निर्गुण प्रभु में ही लीन रहता था। जब नाभि-चक्कर का स्तम्भ नहीं था तब प्राण ईश्वर में ही टिके रहते थे। जब संसार का कोई स्वरूप नहीं था तब इस भवसागर से पार उतरने वाला शबद भी प्रभु में लीन था, क्योंकि जगत के

अस्तित्व से पूर्व आकार रहित त्रिभुवनी ज्योति (नूर) मौजूद थी।

श्री गुरु नानक देव जी ६६वीं पउड़ी में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सुंदर ढंग से तसल्लीबख्श देते हुए समझाते हैं कि हे योगी! जब न तो हृदय था और न ही शरीर का आधार बना था, तब वैराग्यवान मन निर्गुण निराकार प्रभु में टिका हुआ था अर्थात् अगर हृदय और शरीर का निर्माण ईश्वर द्वारा न हुआ होता तो यह मन वैराग्यवान होकर परम शून्य पारब्रह्म में ही लीन होता। यदि नाभि-कमल का आधार (आश्रय) न होता तो यह श्वास रूपी पवन (प्राण) अपने मूल स्वरूप में ही लीन बनी रहती। जब कोई रूप-रेखा, जाति-प्रजाति न होती तो तत्व रूप (सारपूर्ण) शबद तब भी कुल रहित प्रभु में स्थित बना रहता। जब आवागमन (जन्म-मृत्यु), आकाश आदि कुछ भी न होता दो तीनों लोकों में निराकार ईश्वर ज्योति स्वरूप में व्यापक होता। समस्त वर्णों, वेशों (रंग-रूप) से परे एक ही प्रभु आश्चर्य रूप शबद में समाया हुआ है।

अन्तिम पंक्ति में गुरु पातशाह स्पष्ट करते हैं कि शबद को जाने बिना कोई भी पवित्र एवं सच्चा नहीं हो सकता। यह कथन भी वास्तव में अकथनीय है। प्रो. साहिब सिंघ ने इस पउड़ी की अन्तिम पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है— ''हे नानक! (ऐसे उस) सदा कायम रहने वाले प्रभु (को मिलने) के बिना, जिसका कोई सही स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता, कोई व्यक्ति पवित्र नहीं।''

गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रभु के गुणों को, उसकी शोभा को अकथनीय एवं अवर्णनीय माना है। बेअन्त गुणों के मालिक प्रभु एवं असीमित गुणों के भण्डार प्रभु की महिमा सीमित बुद्धि वाला प्राणी नहीं जान सकता। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी भी बाणी में यही समझा रहे हैं, हे प्रभु! तू अकथनीय है। तेरा कथन कैसे किया जा सकता है? जिसके पास समस्त विकारों को मिटा देने वाली शबद-गुरु रूपी शक्ति है उसके मन में हे प्रभु! तू स्वयं ही आ बसता है। तेरे गुण अनन्त हैं, जिनका मूल्य नहीं आंका जा सकता :

—तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥
गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥
तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१ ॥
जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥
तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥

(पन्ना १६०)

—कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा
कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥
हउमै विचि जगु उपजै पुरखा
नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥
गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै
हउमै सबदि जलाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥
नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥
नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै

देखहु रिदै बीचारे ॥६८ ॥ (पन्ना ९४६)

६८वीं पउड़ी में प्रश्न और उत्तर दोनों ही विद्यमान हैं। सिधों का प्रश्न है कि जगत पैदा क्यों होता है और दुखी क्यों होता है? इस गहन प्रश्न का सहज उत्तर सुझाते हुए श्री गुरु नानक पातशाह उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए समझाते हैं कि जगत अहंकार में पैदा होता है। जब इसे ईश्वर भूल जाए तो यह दुख पाता है। जो व्यक्ति गुरु के शबद द्वारा अहंकार को जला लेता है वह सदा कायम रहने वाले प्रभु में लीन रहता है।

सिधों का श्री गुरु नानक देव जी से अत्यन्त श्रद्धाभाव से 'पुरखा' कह कर सम्बोधित करते हुए प्रश्न था कि अब हमें यह बताओ कि संसार की किस-किस विधि से उत्पत्ति होती है अर्थात् इस जगत की उत्पत्ति का ढंग क्या है और किस-किस दुख के कारण यह विनिष्ट हो जाता है।

श्री गुरु नानक देव जी अत्यन्त सहजता से उत्तर देते हुए कथन करते हैं कि जगत अहंकार में पैदा होता है। अगर ईश्वर का नाम भुला दिया जाए तो जगत दुख पाता है, ख्वार होता है। यदि व्यक्ति गुरमुख हो जाए तथा गुरु-दर्शाए मार्ग पर चले तो वह ज्ञान तत्व का चिंतन करता है और शबद के माध्यम से अहंकार को जला देता है। अहंकार के जलते ही जीव का तन-मन निर्मल हो जाता है। उसकी बाणी भी निर्मल हो जाती है, जिसके फलस्वरूप वह सत्य में लीन बना रहता है। ऐसा व्यक्ति ही नाम में लीन बना रह कर वैराग्यवान बना रहता है और सत्य का धारक बन जाता है। अन्तिम पंक्ति में गुरु पातशाह समझाते हैं कि ईश्वरीय गुणों को जाने और धारण किये बिना योग कदाचित नहीं हो सकता। इस तथ्य को हृदय में अच्छी तरह विचार कर देख लो अर्थात् हृदय-कसौटी पर कस कर परख लो।

असल में ईश्वर को भुला देने से जीव को दुख-संताप चारों ओर से आकर घेर लेते हैं। जहां प्रभु का सिमरन नहीं वहां विपत्ति ही विपत्ति है। इसके विपरीत जहां प्रभु का सिमरन है वहां आनंद ही आनंद है:

बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥
हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥
प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥ (पन्ना १९७)

गुरबाणी में अन्यत्र भी यही समझाया है कि यह संसार सागर अत्यंत कष्टदायक है। प्रभु-सिमरन से इसे सहजता से पार किया जा सकता है:

महा तपति सागर संसार ॥
प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥
अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥
सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥ (पन्ना १९६)

संसार रूपी भवसागर से पार उतरने हेतु प्रभु-नाम ही सच्चा आधार है। जिसके चहुं ओर नाम की रेखा खिंची रहती है उसके निकट दुख, रोग, संताप हरगिज नहीं आ सकते।

खबरनामा

नवंबर 1984 का सिक्ख कत्लेआम को कौम कभी भुला नहीं सकती: भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : २ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने कहा कि नवंबर १९८४ में दिल्ली सहित देश के कई शहरों में किये गए सिक्ख कत्लेआम को कौम कभी भुला नहीं सकती। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में भाई लौंगोवाल ने कहा कि हर साल जून और नवंबर का महीना आते ही सिक्ख कौम के ज़ख़्म हरे होने लगते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सिक्ख कत्लेआम के दोषी सामने होने के बावजूद भी उनको अभी तक सज़ा नहीं दी गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि कांग्रेस ने सिक्खों के साथ हमेशा धक्का किया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कत्लेआम के हर दोषी को सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए।

इसी दौरान नवंबर १९८४ के सिक्ख कत्लेआम में शहीद किये गए सिंघ-सिंघनियों की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री दरबार साहिब परिसर में सुस्थित गुरुद्वारा झंडा बुंगा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए। इस अवसर पर श्री दरबार साहिब के स्टाफ सहित संगत उपस्थित थी।

पंथक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सौ वर्षीय स्थापना दिवस

श्री अमृतसर : १७ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सौ वर्षीय स्थापना दिवस श्री अमृतसर में ख़ालसयी शानो- शौकत के साथ मनाया गया। प्रात: काल श्री अकाल तख़्त साहिब पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए, उपरांत गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में आयोजित विशाल पंथक समागम में सिंघ साहिबान तथा पंथ की अन्य सिरमौर शख़्सियतों ने शमूलियत की।

इस अवसर पर विभिन्न पंथक वक्ताओं ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पिछले सौ वर्षीय इतिहास की प्राप्तियों, मौजूदा समस्याओं और चुनौतियों पर मंथन करते हुए भविष्यत् मुखी योजनाएँ बनाने पर ज़ोर दिया। इस अवसर पर जहां पंथक एकता और गुरुद्वारों के एक समान प्रबंध के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रशंसा की गई, वहीं सरकारों द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को कमज़ोर करने की साजिशों से भी पंथ को सचेत रहने का आह्वान किया गया। इस ऐतिहासिक समारोह में पंथक और सामाजिक सरोकारों से संबंध रखते ११ विशेष प्रस्ताव जयकारों की गूँज में पारित किये गए।

पंथक समागम के दौरान कौम के नाम संदेश देते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि केंद्र की सरकारों ने हमेशा सिक्खों के प्रति बेरुख़ी वाला व्यवहार अपनाए रखा है। ज्ञानी

हरप्रीत सिंघ ने कहा कि आज़ादी के बाद सिक्खों को हमेशा चुनौतियां ही दरपेश रही हैं, जो आज के समय में भी जारी हैं। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना के लिए योगदान देने वाली पंथक शख्सियतों को सम्मान भेंट करते हुए कहा कि यह संस्था कौम की उच्च संस्था है, जिसने अपने १०० वर्ष के सफ़र के दौरान उच्चतम प्राप्तियाँ की हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्था को हुकूमतों द्वारा इसलिए निशाना बनाया जाता है क्योंकि वे समझती हैं कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी स्टेट के अंदर एक स्टेट की तरह है। इसी लिए यह संस्था सरकारों की नज़रों को चुभती रही है। जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि मौजूदा केंद्र सरकार भी सिक्खों की हमदर्द नहीं है। उन्होंने गुरबाणी, नितनेम, इतिहास, संप्रदाओं, संस्थाओं, अमृत और सिक्खी सिद्धांतों को चुनौती देने वाले लोगों से संगत को सचेत करते हुए कहा कि आज ऐसी शक्तियों का सामूहिक एकता से मुकाबला करना ज़रूरी है। उन्होंने शिरोमणि अकाली दल को मुखातिब होते हुए कहा कि वह भी अपने सौ वर्षीय स्थापना दिवस को समर्पित होते हुए गाँव स्तर से अपने पंथक सफ़र का नया अध्याय शुरू करे। जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को कमज़ोर करने वाली ताकतों के मामले को गंभीरता के साथ लेते हुए कहा कि ऐसी शक्तियों के मुकाबले के लिए समूचा पंथ एकजुट हो। उन्होंने कहा कि सवाल पूछने का प्रत्येक को अधिकार है, परन्तु इसकी एक मर्यादा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय के सामने घटी घटनाएँ दुखदायी हैं और सिक्खों को ऐसी घटनाओं के पीछे काम करने वाली शक्तियों की पहचान करनी चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पवित्र सरूपों के मामले में जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने स्पष्ट कहा कि यह मामला प्रशासनिक लापरवाही और हेराफेरी के साथ जुड़ा हुआ है न कि बेअदबी के साथ। उन्होंने कहा कि इस मामले में श्री अकाल तख़्त साहब ने निष्पक्ष रूप से जांच करवाई है और पंथ को इस पर शक नहीं करना चाहिए। उन्होंने सौ वर्षीय स्थापना दिवस की ख़ालसा पंथ को बधाई दी।

इस अवसर पर संगत को संबोधित करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर से लेकर अब तक के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सफ़र पर नज़र डालते हुए भविष्य में और भी दृढ़ता के साथ पंथक सेवाएं निभाने का पंथ को आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि आज न केवल गुरुद्वारा प्रबंध में बल्कि समूची मानवता की सेवा-क्षेत्र में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की देन है। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का भविष्य के एजंडे का एलान करते हुए धर्म प्रचार की लहर को आधुनिक साधनों के प्रयोग द्वारा और भी प्रचंड करने की वचनबद्धता दोहराई। इसके साथ ही उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की जिम्मेदारियों के एहसास का प्रकटावा करते हुए विश्व भर के सिक्खों के लिए गुरमति के अनुसार सेवा निभाने, विद्या के प्रचार-प्रसार और विभिन्न स्थानों पर बस रहे सिक्खों की समस्याओं के हल के लिए विश्व स्तरीय सलाहकार कमेटी के गठन का एलान भी किया। इसके अलावा बढ़ रहे प्रदूषण के हल के लिए वातावरण लहर के अंतर्गत हर गुरुद्वारा साहिब से पौधा-प्रसाद देने, गाँवों-कसबों-शहरों में ग्रंथी साहिबान को गुरबाणी संथा एवं सिक्ख रहित मर्यादा में परिपक्व बनाने, धर्मी फौजियों की पेंशन और अन्य समस्याओं के हल के लिए पैरवी करे, सिक्ख कैदियों की रिहाई की माँग को उठाने का भी अहद किया। इसके साथ ही उन्होंने धर्म प्रचार-प्रसार के लिए फिर से दृढ़ता का प्रकटावा करते हुए वर्ष भर

शताब्दी को समर्पित समागम आयोजित करने का एलान किया।

शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने समूची कौम को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सौ वर्षीय स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने देश की आज़ादी के संघर्ष में अति उत्साह पैदा किया। उन्होंने कहा कि देश की आज़ादी में सबसे अधिक कुर्बानियां सिक्ख कौम की हैं और आज़ादी के बाद भी सिक्खों ने हर क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की संगती संस्था है, परंतु इसके विरोधियों से इसकी आभा सही नहीं जाती। उन्होंने सिक्ख विरोधी शक्तियों के बहकावे में आकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की विरोधता करने वाले लोगों से कहा कि वे पहले इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्राप्तियों की जानकारी हासिल करें। निजी लालसाओं के कारण सिक्ख पंथ की सेवक संस्था की निंदा करना उचित नहीं है। सिक्ख पंथ के सामने मौजूदा चुनौतियों पर गंभीरता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि नशाखोरी, पतितपुना, धर्म-परिवर्तन और देश में अल्पसंख्यकों में बढ़ रही असुरक्षा की भावना को दूर करने के लिए सामूहिक यत्नों की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को यकीनी बनाना केंद्र और राज्य की सरकारों की जिम्मेदारी है। स. सुखबीर सिंघ बादल ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को विरासत की संभाल और नौजवानी में इसके प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए प्रयास करने के लिए कहा। उन्होंने आशा प्रकट की कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा सिक्ख जत्थेबंदियों के आपसी तालमेल से सभी चुनौतियों से पार जाकर सार्थक निष्कर्ष ज़रूर निकलेंगे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और वातावरण के प्रति जागरूकता पर भी ज़ोर दिया। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सुझाव देते हुए कहा कि पंथक सेवाओं में बेहतर नतीजे लेने के लिए भविष्यमुखी योजनाओं को पाँच वर्षीय दायरे में पूरा किया जाये। इसके लिए उन्होंने संगत से सुझाव लेकर गौर करने की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया।

इस अवसर पर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंघ गौहर, बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ, तरुना दल के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ हरियां वेला, दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा, नानकसर संप्रदाय की तरफ से बाबा लक्खा सिंघ, निरमले संप्रदाय से बाबा तेजा सिंघ एम. ए., दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंथक कमेटी के प्रधान स. मनजिंदर सिंघ सिरसा, तख़्त श्री पटना साहिब कमेटी के प्रधान स. अवतार सिंघ हित ने भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के स्थापना दिवस के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। इस दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ ने आई हुई संगत का धन्यवाद किया। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना से लेकर मौजूदा समय तक का संक्षिप्त रूप से इतिहास प्रदर्शित करती एक पुस्तिका जारी की गई और प्रमुख शख़्सियतों को गुरु-बख्शिश सिरोपाओ और सम्मान-चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

इस समागम में पूर्व केंद्रीय मंत्री बीबी हरसिमरत कौर बादल, जत्थेदार तोता सिंघ, स. बलविंदर सिंघ भूंदड़, स. दलजीत सिंघ (चीमा), प्रोफेसर किरपाल सिंघ बड़ूंगर, बीबी जगीर कौर सहित अकाली दल के नेतागण, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान, कार सेवा वाले संत-महापुरूष तथा भारी संख्या में संगत उपस्थित थी।